सत्यमेव जयते

प्रतिभा

संयुक्त हिंदी वार्षिक पत्रिका

अंक-5

वर्ष - 2025

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) आंध्र प्रदेश
तथा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय
विजयवाड़ा-520002

प्रतिभा पत्रिका परिवार
संयुक्त हिंदी वार्षिक पत्रिका
अंक-5 : वर्ष - 2025

मुख्य संरक्षक
श्रीमती शांति प्रिया एस
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी)

मुख्य संरक्षक
श्री शरत चतुर्वेदी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

प्रधान संपादक
श्रीमती नौपाड़ा आश्रिता
उप महालेखाकार (हक़दारी)

सलाहकार संपादक
श्रीमती सत्या एल.आर.
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)

संपादक
धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ अनुवादक

परामर्श समिति

श्रीमती साईश्री, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

श्रीमती चित्रलेखा, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री अंकिता कोईरी, कनिष्ठ अनुवादक

श्री धर्मेंद्र शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय वस्तु

माननीय गृहमंत्री का संदेश	1
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का संदेश	3
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का संदेश	4
प्रधान संपादक का संदेश	5
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा/एएमजी-III) का संदेश	6
संपादकीय	7
पाठक संवाद	8
अनुक्रमणिका	10
लेख एवं कविताएं	13
कार्यालय के प्रेरक और रचनात्मक क्षण	54

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

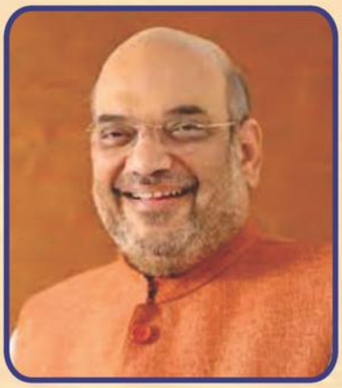

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

मुख्य संरक्षक का संदेश.........................

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका "प्रतिभा" का पाँचवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका हमारे विभाग के भीतर सृजनात्मकता, विचारों की विविधता, तथा साझा अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम के रूप में निरंतर विकसित हो रही है।

"प्रतिभा" न केवल हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक क्षमताओं को उजागर करने का मंच है, अपितु यह कार्यालयीन सांस्कृतिक जीवन को भी समृद्ध बनाती है। लेख, कविताएँ, संस्मरण, और अनुभवों के माध्यम से यह पत्रिका हमें एक-दूसरे को जानने, समझने और एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर देती है।

मैं उन सभी सदस्यों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस अंक को संभव बनाने के लिए अपने श्रम, समय और प्रतिभा का योगदान दिया। विशेष रूप से संपादकीय टीम प्रशंसा की पात्र है, जिनके अथक प्रयासों से यह अंक अपने उत्कृष्ट स्वरूप में हमारे समक्ष है।

आशा है कि प्रतिभा का यह अंक न केवल पठनीय होगा, अपितु प्रेरणादायक भी सिद्ध होगा। मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि भविष्य में भी अपनी सृजनात्मकता को इसी प्रकार साझा करते रहें और इस पहल को और अधिक समृद्ध बनाएं।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रीमती शांति प्रिया एस
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी)

मुख्य संरक्षक का संदेश..........................

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका "प्रतिभा" का पाँचवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह हमारे विभाग की सृजनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक विविधता तथा आंतरिक संवाद का सशक्त प्रतीक बन चुकी है।

"प्रतिभा" न केवल लेखन व अभिव्यक्ति की प्रतिभा को मंच देती है, बल्कि यह हमारी कार्यसंस्कृति में सहयोग, सामूहिकता और सकारात्मकता के भाव को भी प्रोत्साहित करती है। इसमें प्रकाशित सामग्री हमारे सहकर्मियों के भीतर छिपे रचनात्मक पक्ष को सामने लाने का कार्य करती है, जो कि हमारे संगठन के लिए अत्यंत मूल्यवान है।

इस अंक को मूर्त रूप देने वाले सभी रचनाकारों, सहयोगियों एवं विशेष रूप से संपादकीय समिति को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। आपके समर्पण, प्रतिबद्धता और रचनात्मक दृष्टिकोण के कारण ही यह अंक एक प्रेरणादायक संग्रह बन सका है।

आशा है कि प्रतिभा का यह नवीन अंक सभी पाठकों को प्रेरणा देगा और भविष्य में और भी अधिक कर्मठ योगदान हेतु उत्साहित करेगा।

आप सभी को इस रचनात्मक यात्रा के लिए शुभकामनाएँ।

श्री शरत चतुर्वेदी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान संपादक का संदेश........................

हमारे कार्यालय की पत्रिका “प्रतिभा” का पाँचवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है, यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है। इस पत्रिका ने अल्प समय में ही अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है और सहकर्मियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच सिद्ध हुई है।

“प्रतिभा” केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह हमारी सामूहिक सोच, संवेदनाओं और अनुभवों का प्रतिबिंब है। हर अंक हमें यह विश्वास दिलाता है कि कार्य के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और सृजनशीलता के प्रति हमारी लगन भी उतनी ही प्रखर है।

मैं उन सभी रचनाकारों और संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ जिन्होंने इस अंक को संभव बनाया। आशा है कि “प्रतिभा” की यह रचनात्मक यात्रा इसी उत्साह के साथ आगे बढ़ती रहेगी और सभी पाठकों को प्रेरित करती रहेगी।

श्रीमती नौपाड़ा आश्रिता
उप महालेखाकार (हक़दारी)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश..

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका "प्रतिभा" का पाँचवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका सहकर्मियों की सृजनात्मकता, साहित्यिक अभिरुचि और अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच है।

"प्रतिभा" न केवल हमारे कार्यालय परिवार के बीच संवाद और जुड़ाव को प्रगाढ़ करती है, बल्कि इसमें निहित लेख, कविताएँ और अनुभव हमें प्रेरित भी करते हैं। यह अंक निश्चित ही पाठकों को नई दृष्टि और उत्साह प्रदान करेगा।

इस अंक को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, सहयोगियों और संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई। आशा है कि "प्रतिभा" की यह निरंतर यात्रा यूँ ही आगे बढ़ती रहेगी और हम सभी को रचनात्मकता से जोड़ती रहेगी।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रीमती ए सुषमा रविराज
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा/एएमजी-III)

संपादकीय.......................................

प्रिय पाठकों,

शब्दों के इस विशाल संसार में कुछ अभिव्यक्तियाँ ऐसी होती हैं जो केवल लिखी नहीं जातीं, बल्कि हृदय की गहराइयों से प्रवाहित होकर आत्मा को आलोकित करती हैं। मुझे यह कहने में अपार आनंद है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका “प्रतिभा” का पाँचवाँ अंक अब आपके हाथों में है। यह अंक केवल एक प्रकाशन मात्र नहीं, अपितु हमारे सामूहिक स्वप्नों, संवेदनाओं और रचनात्मक चेतना का एक उज्ज्वल दीप है।

“प्रतिभा” की यात्रा अब तक मानो किसी सधे हुए राग की भाँति रही है—हर अंक अपनी नई तान, नया स्वर और नई लय के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित होता रहा है। यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों की सृजनशीलता का वह कैनवास है, जिस पर अनुभवों के रंग, विचारों की रेखाएँ और भावनाओं की आभा मिलकर एक सुंदर चित्र रचते हैं।

हमारा दैनंदिन कार्यालयीन जीवन अनुशासन और उत्तरदायित्व से भरा हुआ है, किंतु इन कठोरताओं के बीच “प्रतिभा” की कोमल सरिता बहकर हमें यह याद दिलाती है कि मनुष्य केवल कर्म का यंत्र नहीं, बल्कि भावनाओं और संवेदनाओं का स्रोत भी है। यही कारण है कि यह पत्रिका हमारे सामूहिक व्यक्तित्व का दर्पण और हमारी अंतरात्मा की ध्वनि बनकर उभरती है।

इस पाँचवें अंक की सुगंध उन सभी रचनाकारों के श्रम और सृजन से महक रही है, जिन्होंने अपनी कलम को जीवन की अनुभूतियों से सींचा है। संपादकीय दल का समर्पण और सजगता इस अंक को पूर्णता का रूप देती है।

मुझे विश्वास है कि “प्रतिभा” का यह नवीन पुष्प आपके हृदय को स्पर्श करेगा, आपके विचारों को प्रज्वलित करेगा और आपको अपनी रचनात्मकता के नए आयाम खोजने की प्रेरणा देगा। आपके अमूल्य सुझाव ही इस पत्रिका की ऊर्जा हैं, और इसी से इसकी यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहेगी।

सादर,

धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ अनुवादक

पाठक संवाद

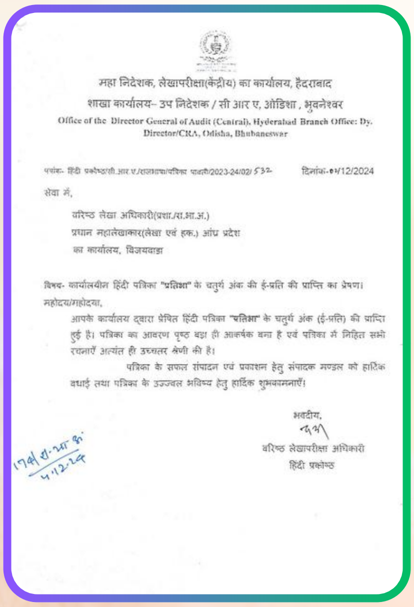

महा निदेशक, लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद
शाखा कार्यालय– उप निदेशक / सी आर ए, ओडिशा , भुवनेश्वर
Office of the Director General of Audit (Central), Hyderabad Branch Office: Dy. Director/CRA, Odisha, Bhubaneswar

पत्रांक- हिंदी प्रकोष्ठ/सी.आर.ए./राजभाषा/पत्रिका पावती/2023-24/02/ 532   दिनांक-04/12/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(प्रशा./रा.भा.अ.)
प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हक.) आंध्र प्रदेश
का कार्यालय, विजयवाड़ा

विषय- कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, AUDIT (II), WEST BENGAL

दिनांक- 21/11/24
21 NOV 2024

To,
The Senior Accounts Officer (Administration)
Office of the Accountant General (A & E),
Andhra Pradesh, Vijayawada-520002

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष

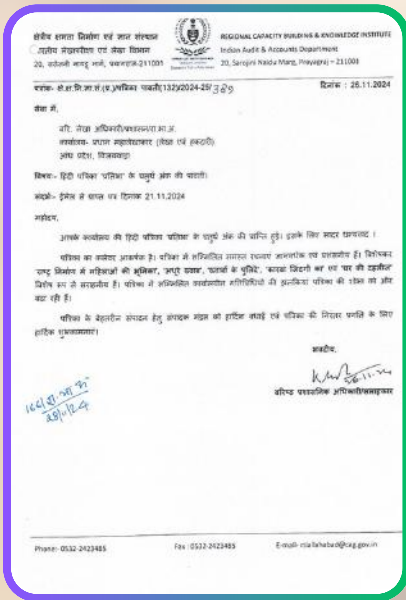

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

दिनांक : 26.11.2024

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 21.11.2024

Phone:- 0532-2423485   Fax : 0532-2423485   E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

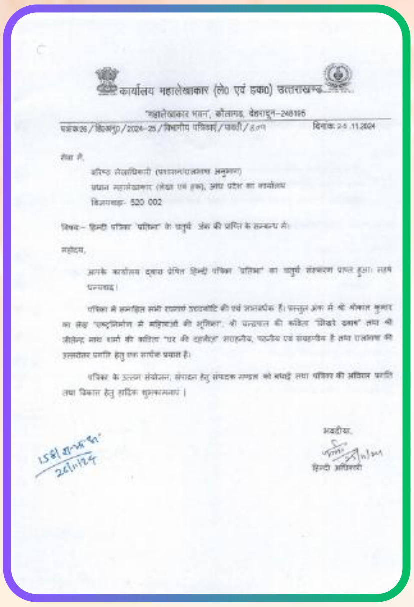

कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0) उत्तराखण्ड
"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

दिनांक 25.11.2024

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

पत्रांक सं.: प्र.अ.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. 82047/2024-25/1810242/2024
दिनांक: 05-12-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन/रा.भा.अ.)
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश,
विजयवाड़ा-520002

विषय - हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के चतुर्थ अंक की ई- प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं "कर्म प्रभाव", "राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका" एवं "प्रेरणा" ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 05-12-2024 11:41:12

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

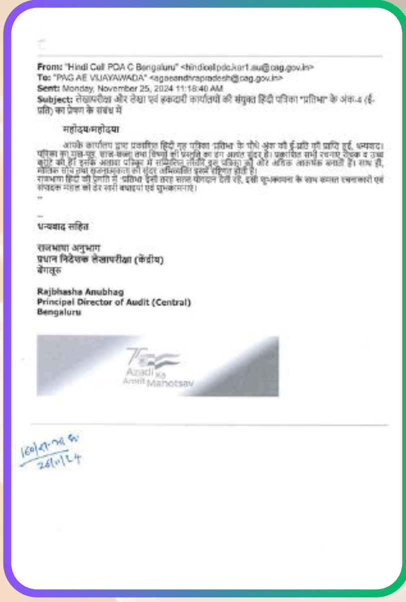

From: "Hindi Cell PDA C Bengaluru" <hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>
To: "PAG AE VIJAYAWADA" <agaeandhrapradesh@cag.gov.in>
Sent: Monday, November 25, 2024 11:18:40 AM
Subject: लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के अंक-4 (ई-प्रति) का प्रेषण के संबंध में

महोदय/महोदया

धन्यवाद सहित

राजभाषा अनुभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
बेंगलूरु

Rajbhasha Anubhag
Principal Director of Audit (Central)
Bengaluru

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.6, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

दिनांक/Dated: 02.12.2024

विषय - लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका "प्रतिभा" के अंक-4 (ई-प्रति) का प्रेषण।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001

दिनांक 09.12.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
आन्ध्र प्रदेश, विजयवाड़ा - 520002

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक-प्र.म.ले. (ले. एवं हक.)/वरि. प्र./रा.भा.अ./पत्रिका/अंक-4/2024-25, दिनांक 20.11.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "प्रतिभा" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "प्रतिभा" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री जितेंद्र नाथ शर्मा की रचना "क्यूं न हम वादियों में खो जाएं", श्री चंद्र पाल की रचना "बिखरे ख्वाब", सुश्री अंकिता कोईरी की रचना "प्रेरणा", इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

पाठक संवाद

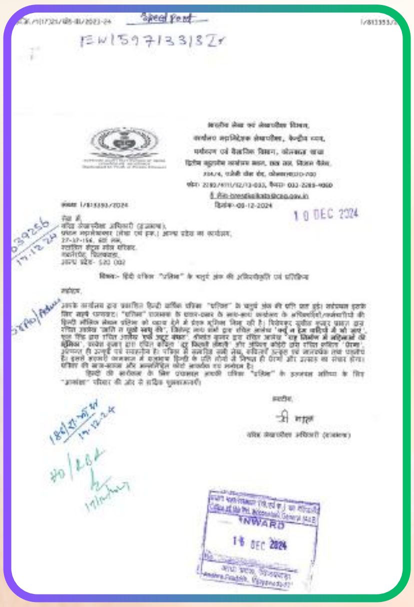

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017

EKTA

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक), त्रिपुरा, अगरतला
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TRIPURA, AGARTALA - 799006

लेख, यात्रा वृत्तान्त, कहानियां एवं कविताएं

01 विजयवाड़ा की ओर कदम : कैम्प कार्यालय से नये कार्यालय तक की कहानी — 13
ईमनि ज्योति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

02 आधुनिक सिनेमा और मिथक की नई व्याख्या — 16
धीरज कुमार रॉय,
वरिष्ठ अनुवादक

03 कार्य -जीवन संतुलन — 21
मोहम्मद अज़हरुद्दीन
सहायक लेखा अधिकारी

04 एक यादगार यात्रा की कहानी – नीलगिरी (ऊटी, तमिलनाडु) की गोद में — 24
संदीप कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

05 केरल डायरीज़ — 26
श्रीमति चित्रलेखा,
वरिष्ठ अनुवादक

06 विजयवाड़ा- आंध्र प्रदेश की व्यापारिक राजधानी — 29
ज्ञान प्रकाश
लेखाकार

07 बोब्बिली युद्ध — 31
सुनील रुत्तला
लेखाकार

08 मिट्टी के बर्तनों का लोप और उनके संरक्षण के उपाय — 33
मुलगापक संन्यासी राव
लेखाकार

लेख, यात्रा वृत्तान्त, कहानियां एवं कविताएं

09 सपनों की उड़ान — 34
रोनित बंदुगुला
लेखाकार

10 भटकती यादें — 36
समीर सरकार
लेखाकार

11 योग का इतिहास — 39
अंकिता कोइरी
कनिष्ठ अनुवादक

12 सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप ? — 41
स्मृति कुमारी
पत्नी श्री संदीप कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

13 सरकारी कार्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग — 43
अनूप चौहान
आशुलिपिक

14 सोशल मीडिया — 44
धर्मेन्द्र शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

15 क्या हम वास्तव में इस डिजिटल युग में अपने बच्चों को कितना जानते हैं? — 46
माधुरी टेल्कपल्ली
वरिष्ठ लेखाकार

16 कृष्णा नदी : विजयवाड़ा के दिल की धड़कन — 48
उदयकिरण नेयिला
लेखाकार

लेख, यात्रा वृत्तान्त, कहानियां एवं कविताएं

17 एक रिश्ता ऐसा भी — 48
श्री अमित कौशिक
पति श्रीमति चित्रलेखा, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

18 बंधन और उड़ान — 49
के काव्या
लेखाकार

19 नारी की शक्ति — 50
संतोष कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

20 बेटा — 51
मीनू सिंह
माता श्री अदित्य कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

21 व्यथा, एक बेटी की — 51
मोहित
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

22 परछाइयों से उजाले तक — 52
सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

23 तन्हाइयों के साथ — 53
अंकिता कोड़री
कनिष्ठ अनुवादक

24 कार्यालय के प्रेरक और रचनात्मक क्षण — 54

संयुक्त हिंदी परखवाड़ा-2024 प्रतियोगिताओं के परिणाम — 60

"विजयवाड़ा की ओर कदम : कैम्प कार्यालय से नये कार्यालय तक की कहानी"

ईमनि ज्योति
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आंध्र प्रदेश राज्य के विभाजन के ऐतिहासिक क्षण के उपरांत, जब यह भूभाग आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के रूप में दो स्वतंत्र इकाइयों में रूपांतरित हुआ, तभी महालेखाकार का कार्यालय भी वित्तीय वर्ष 2016-17 में नई संरचना के साथ दो हिस्सों में पुनर्गठित किया गया। इस परिवर्तन की घड़ी में आंध्र प्रदेश कार्यालय में सेवा देने के इच्छुक कर्मचारियों से विकल्प आमंत्रित किए गए। उनके परिवारों, विशेषकर बच्चों की स्थानीय पहचान और अधिकारों की रक्षा को ध्यान में रखते हुए, 2 जून 2017 को लेखा एवं हकदारी तथा लेखापरीक्षा कार्यालयों की पहल पर विजयवाड़ा में एक कैम्प कार्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

नए इतिहास की नींव उसी दिन पड़ी, जब आंध्र प्रदेश हेतु चयनित कर्मचारियों का प्रथम समूह 25 जुलाई 2017 को विजयवाड़ा के भारतीनगर स्थित मधुवनी अपार्टमेंट्स पहुँचा। वहां स्थापित कैम्प कार्यालय की चारदीवारी में उन्होंने अपने नए कार्य-यात्रा की शुरुआत की। 21 नवंबर 2017 तक, इन कर्मठ कर्मचारियों ने उसी भवन से पूरे समर्पण और निष्ठा के साथ अनुभाग की ज़िम्मेदारियाँ निभाईं और चुनौतियों को अवसरों में बदलते हुए, एक नई परंपरा की शुरुआत की।

वाउचरों की अत्यधिक प्राप्ति और सीमित स्थान की चुनौती ने विजयवाड़ा कैम्प कार्यालय को नए आयाम दिए। यही कारण था कि कार्यालय को एनीकेपाडु स्थित विशाल और सुसज्जित भवन में स्थानांतरित किया गया, जो आज भी महालेखाकार कार्यालय की धरोहर बनकर पुराने अभिलेखों के सुरक्षित भंडारण का दायित्व निभा रहा है।

इस नए अध्याय का शुभारंभ 22 नवम्बर 2017 को हुआ, जब अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्रीमती रीमा प्रकाश और प्रधान महालेखाकार श्रीमती लता मल्लिकार्जुन ने कार्यालय का विधिवत उद्घाटन किया। इस भवन को कार्य-योग्य स्वरूप देने में उप महालेखाकार/प्रशासन श्री दीपक रघु, वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन श्री ए.शिव प्रसाद तथा सहायक लेखा अधिकारी श्री एन.रंगा बाबू के अथक प्रयास और दूरदर्शिता का अमिट योगदान रहा। उनकी कड़ी मेहनत ने केवल एक भवन को संवारने का कार्य नहीं किया, बल्कि कार्यालय के भविष्य की मज़बूत नींव भी रखी।

वित्तीय वर्ष 2017-18 में कोषालयों से प्राप्त वाउचरों को सुरक्षित भंडारण हेतु हैदराबाद स्थानांतरित किया गया। इसी बीच आंध्र प्रदेश कार्यालय की तकनीकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, कैम्प कार्यालय में नया सर्वर स्थापित किया गया। यह सर्वर महज़ एक मशीन नहीं था, बल्कि भविष्य की प्रशासनिक दक्षता और पारदर्शिता की दिशा में एक ठोस कदम था।

1 अप्रैल 2018 से मासिक सिविल खाता तैयार करने वाले अनुभाग—वीएलसी, मुख्य लेखा, बुकिंग सेल, सीएम तथा अकाउंट करंट I एवं II—ने कैम्प कार्यालय से विधिवत कार्य आरंभ किया। यही नहीं, अप्रैल 2018 से मासिक सिविल खाता कैम्प कार्यालय से ही सफलतापूर्वक तैयार होने लगा और जुलाई 2021 तक यह प्रक्रिया सतत एवं निर्बाध रूप से यहीं से संचालित होती रही। यह अवधि न केवल तकनीकी प्रगति की गवाह रही, बल्कि विजयवाड़ा कैम्प कार्यालय की कार्यकुशलता और विश्वसनीयता की मिसाल भी बनी।

कैम्प कार्यालय केवल कार्य का केंद्र ही नहीं रहा, बल्कि यहाँ उत्सव और सृजनशीलता का भी वातावरण सदा जीवंत रहा। सभी राष्ट्रीय पर्व पूरे उत्साह और गरिमा के साथ मनाए गए, हिंदी पखवाड़ा ने भाषा-प्रेम की अलख जगाई, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस ने स्वास्थ्य और अनुशासन का संदेश दिया, वहीं महिला दिवस ने कार्यस्थल पर समानता और सशक्तिकरण की भावना को और प्रखर किया।

यही नहीं, 18 सितम्बर 2018 का दिन कैम्प कार्यालय के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है, जब यहाँ राष्ट्रव्यापी पेंशन अदालत का आयोजन हुआ। यह आयोजन न केवल अत्यंत सफल रहा, बल्कि पेंशनधारकों के विश्वास और संतोष को भी नई ऊँचाई तक पहुँचाने वाला साबित हुआ।

कैम्प कार्यालय और नये कार्यालय की सुचारू व्यवस्था केवल एक प्रशासनिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह उन अधिकारियों की दूरदृष्टि और नेतृत्व क्षमता का प्रमाण भी थी, जिन्होंने हर कदम पर मार्गदर्शन दिया। श्री दीपक रघु (उप महालेखाकार/प्रशासन) तथा श्री जितेंद्र नाथ शर्मा (उप महालेखाकार/प्रशासन) ने प्रशासन के संगठनात्मक मजबूती की दिशा तय की, वही दूसरी ओर श्री एम. सत्यनारायण (उप महालेखाकार/लेखा), श्री गौतमन रामदॉस (उप महालेखाकार/लेखा) एवं श्री आर.वी.के. साई गांधी (उप महालेखाकार/लेखा) ने वित्तीय अनुशासन, लेखा प्रणाली व नेटवर्क और कनेक्टिविटी को सशक्त बनाकर कार्यालय को डिजिटल युग के साथ कदम से कदम मिलाने योग्य बनाया। इसी कड़ी में श्री गुरुराजन (उप महालेखाकार/हकदारी) ने हकदारी व शिकायत निवारण व्यवस्था को व्यवस्थित रूप दिया।

इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का नेतृत्व श्रीमती लता मल्लिकार्जुन प्रधान महालेखाकार और श्री अनिंद्य दासगुप्ता महालेखाकार ने किया, जिनकी प्रेरणा और दूरदर्शिता ने विजयवाड़ा कार्यालय को एक नई पहचान और गौरव दिलाया।

मुख्यालय ने विजयवाड़ा कार्यालय के भविष्य की मजबूत नींव रखते हुए स्टालिन सेंट्रल बिल्डिंग में चार मंज़िलों को किराये पर लेने की अनुमति प्रदान की। मार्च 2021 से विकास कार्य प्रारंभ हुआ और जून 2021 तक इसे पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। कार्य की प्रगति पर निरंतर नज़र रखने के लिए एक संयुक्त समिति गठित की गई, जिसने कोविड महामारी जैसी अभूतपूर्व चुनौतियों के बावजूद अद्भुत धैर्य और समर्पण के साथ इस कार्य को समय पर आगे बढ़ाया।

अंततः वह ऐतिहासिक क्षण 1 जुलाई 2021 को आया, जब विजयवाड़ा के नवनिर्मित और सुसज्जित कार्यालय परिसर का उद्घाटन हुआ। यह केवल भवन का उद्घाटन नहीं था, बल्कि नई संभावनाओं, नए सपनों और सशक्त प्रशासनिक यात्रा की शुरुआत थी। इसके उपरांत, 8 जुलाई 2021 को प्रशासन द्वारा स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए गए, जिनके अनुसार एनीकेपाडु कैम्प कार्यालय और हैदराबाद से विभिन्न अनुभागों का चरणबद्ध तरीके से स्थानांतरण प्रारंभ हुआ।

स्थानांतरण की इस जटिल प्रक्रिया को सरल और व्यवस्थित बनाने के लिए अनेक कदम उठाए गए। स्थानीय परिस्थितियों से परिचित कर्मचारियों की मदद से एक हेल्प डेस्क का गठन किया गया, ताकि हर समस्या का त्वरित समाधान मिल सके। अनुभागवार चिह्नांकन कर अभिलेखों की सुव्यवस्थित स्थापना की गई, जिससे स्थानांतरण के दौरान किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो।

सर्वर, सिस्टम और यू.पी.एस. को विशेष सावधानी से एक साथ स्थानांतरित कर पुनः स्थापित किया गया और 5 अगस्त 2021 को सफलतापूर्वक नेटवर्क कनेक्टिविटी बहाल कर दी गई। अस्थायी इनवर्ड अनुभाग का गठन किया गया ताकि पेंशन मामलों और अन्य डाक का कार्य बाधित न हो। इसी क्रम में पेंशन एवं फंड्स लाइब्रेरी के लिए रैक लगाए गए, जिससे अभिलेखों को सुरक्षित रखा जा सके और उनकी त्वरित उपलब्धता सुनिश्चित हो।

12 अगस्त 2021 से हैदराबाद से अभिलेखों के स्थानांतरण की शुरुआत हुई। कुल 1450 बैग अभिलेख विजयवाड़ा और एनीकेपाडु पहुँचाए गए। इसके अतिरिक्त, 89 कम्पैक्टर्स भी हैदराबाद से लाकर पुनः स्थापित किए गए। रिकॉर्ड्स, फर्नीचर और सिस्टम के स्थानांतरण हेतु कुल 21 ट्रिप्स का संचालन किया गया। अंततः, 2 फरवरी 2022 को अंतिम खेप के आगमन के साथ यह ऐतिहासिक प्रक्रिया पूर्ण हुई।

विजयवाड़ा और हैदराबाद की स्थापना अनुभाग टीमों के सामूहिक प्रयासों ने इस विशाल कार्य को सफलता का रूप दिया और प्रशासन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप इसे एक अनुकरणीय उपलब्धि बना दिया।

आधुनिक सिनेमा और मिथक की नई व्याख्या

धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ अनुवादक

भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना में मिथक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। मिथक केवल धार्मिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि वे सामूहिक स्मृति, नैतिक मूल्यों और सामाजिक आचरण को दिशा देने वाले स्रोत भी हैं। रामायण और महाभारत जैसी महाकाव्यात्मक कथाएँ न केवल धार्मिक श्रद्धा का आधार हैं, बल्कि उन्होंने भारतीय मानस की गहराइयों में आदर्श, आस्था और संघर्ष की रूपरेखा भी गढ़ी है।

आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण के प्रभाव से सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक दृष्टि निरंतर परिवर्तित हो रही है। इस संदर्भ में सिनेमा, जो आज सबसे प्रभावी और लोकप्रिय माध्यमों में से एक है, मिथकों को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है। भारतीय फिल्मकार मिथकों की पुनर्व्याख्या करते हुए उन्हें समकालीन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से जोड़ते हैं।

यह पुनर्पाठ केवल मनोरंजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह दर्शाता है कि मिथक आधुनिक विमर्शों—नारीवाद, पर्यावरणीय संकट, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और वैश्वीकरण—में कितने प्रासंगिक बने हुए हैं। इस प्रकार सिनेमा मिथक को अतीत से निकालकर वर्तमान और भविष्य की चेतना से जोड़ता है।

महानायकों की नई छवि : भारतीय मिथक परंपरा का सबसे बड़ा आकर्षण सदैव उनके महानायक रहे हैं—राम, कृष्ण, अर्जुन, भीष्म जैसे चरित्र, जिन्होंने भारतीय जनमानस में आदर्श आचरण, धर्म, त्याग और संघर्ष की प्रतिमाएँ गढ़ीं। वे केवल पात्र नहीं थे, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति में ऐसे जीवंत प्रतीक बन गए जो हर युग में लोगों को प्रेरित करते रहे। आधुनिक सिनेमा ने इन्हीं महानायकों को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है, जहाँ उनका रूप केवल धार्मिक श्रद्धा तक सीमित न रहकर सामाजिक-राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन जाता है।

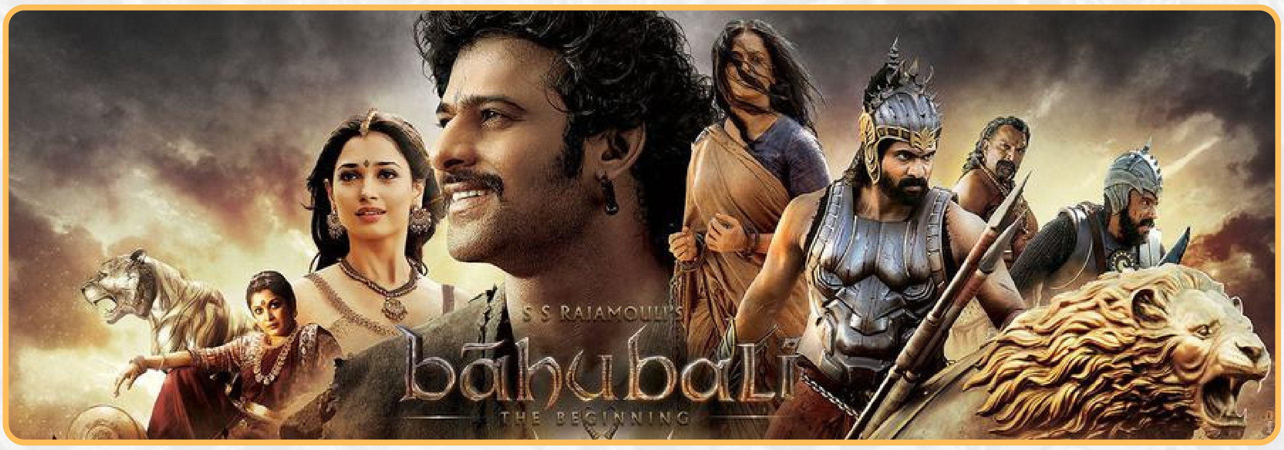

एस.एस. राजामौली की बाहुबली (2015–2017) इसका सबसे सशक्त उदाहरण है। अमरेन्द्र बाहुबली और महेंद्र बाहुबली के चरित्रों में हमें रामायण और महाभारत की स्पष्ट छवियाँ मिलती हैं। अमरेन्द्र का त्याग, धर्मनिष्ठा और न्यायप्रियता कहीं-न-कहीं मर्यादा पुरुषोत्तम राम की स्मृति जगाते हैं, जबकि महेंद्र का संघर्ष, संकल्प और जुझारूपन अर्जुन के आदर्श को मूर्त रूप देता है। परंतु राजामौली -

इन मिथकीय संकेतों को केवल श्रद्धा या पूजा तक सीमित नहीं रखते। उनके हाथों यह कथा सत्ता-संघर्ष, राजनीतिक षड्यंत्र और सामूहिक जनशक्ति का आधुनिक रूपक बन जाती है।

यहाँ दर्शक केवल एक पौराणिक कथा नहीं देखते, बल्कि उस समाज का आईना भी देखते हैं जहाँ जन-प्रतिरोध, सामूहिक आस्था और न्याय की लड़ाई को मिथकीय भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इसीलिए बाहुबली सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक परियोजना है जो भारतीय मानस में निहित मिथकों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर उन्हें नया जीवन देती है।

प्रख्यात आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है कि “मिथक कभी स्थिर नहीं रहते, वे समय के साथ नए अर्थ ग्रहण करते हैं।” यही बात बाहुबली के संदर्भ में भी सही सिद्ध होती है। फिल्म ने राम और अर्जुन की छवियों को लेकर उन्हें 21वीं सदी के राष्ट्रवाद, प्रतिरोध और सामूहिक संकल्प की भाषा में रूपांतरित कर दिया। इस प्रकार आधुनिक सिनेमा के महानायक अब केवल धार्मिक आदर्श नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के प्रतीक भी बन जाते हैं।

स्त्री की पुनर्व्याख्या : भारतीय मिथकों में स्त्री का स्थान हमेशा एक जटिल विमर्श का हिस्सा रहा है। पारंपरिक आख्यानों में स्त्रियों को प्रायः धैर्य, त्याग और आज्ञाकारिता की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया—चाहे वह सीता का अग्निपरीक्षा देना हो, सावित्री का यमराज से पति का जीवन माँगना, या द्रौपदी का महाभारत के युद्ध का कारण बनना। इन सभी पात्रों ने भारतीय जनमानस में "पतिव्रता" और "सहनशीलता" का आदर्श स्थापित किया। लेकिन साथ ही, इन मिथकों में निहित अन्याय, अपमान और स्त्री की विवशता की परतें भी लंबे समय तक छिपी रहीं।

आधुनिक सिनेमा ने इन परतों को उधेड़ने का साहस किया है। यहाँ स्त्रियाँ अब केवल त्याग की मूर्तियाँ नहीं, बल्कि स्वायत्त, प्रतिरोधी और सशक्त नारी के रूप में सामने आती हैं। उदाहरण के लिए, सुजॉय घोष की चर्चित लघु फिल्म अहिल्या (2015) पारंपरिक मिथक को पूरी तरह पलट देती है। जिस अहिल्या को प्राचीन आख्यानों में शापित और असहाय स्त्री के रूप में देखा गया, वही आधुनिक फिल्म में अपने ऊपर हुए अन्याय का प्रतिकार करने वाली एक न्यायप्रिय और सक्रिय नारी बन जाती है। इस पुनर्व्याख्या में स्त्री अब करुणा की पात्र नहीं, बल्कि शक्ति और प्रतिशोध की वाहक है।

इसी तरह सीता की कथा पर आधारित कई आधुनिक फिल्मों और साहित्यिक प्रयोगों में उन्हें मात्र "त्यागमूर्ति" न मानकर निर्णय लेने वाली स्वतंत्र स्त्री के रूप में देखा जा रहा है। सिनेमा के परदे पर यह बदलाव केवल चरित्रों के रूप में नहीं, बल्कि समाज की बदलती सोच के प्रतीक के रूप में भी सामने आता है।

प्रख्यात नारीवादी लेखिका उषा भटनागर लिखती हैं— “आधुनिक स्त्री विमर्श ने मिथकों की बेड़ियों को तोड़ते हुए उन्हें प्रतिरोध की आवाज़ बनाया है।” यही प्रतिरोध हमें सिनेमा में दिखता है, जहाँ स्त्री पात्र अब पितृसत्ता की चौखट पर मौन बैठी नहीं रहतीं, बल्कि अपने लिए जगह बनाती हैं।

यह परिवर्तन महज़ सौंदर्यशास्त्र का हिस्सा नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। मिथकों की वही स्त्रियाँ, जो कभी विवशता और पीड़ा का प्रतीक थीं, अब आधुनिक सिनेमा में न्याय, स्वतंत्रता और सशक्तिकरण की नई आवाज़ बन चुकी हैं।

लोकप्रिय संस्कृति और सुपरहीरो : वैश्विक स्तर पर आज का दर्शक स्पाइडरमैन, सुपरमैन या बैटमैन जैसे पश्चिमी सुपरहीरो से भलीभाँति परिचित है। इन पात्रों में विज्ञान और कल्पना का अद्भुत संगम दिखाई देता है। परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में सुपरहीरो का बीज कहीं गहराई में मिथकों और पुराणों में निहित है। राम, कृष्ण, हनुमान या दुर्गा—ये सभी पात्र अपने-अपने समय में अलौकिक शक्ति, नैतिक -

आदर्श और सामाजिक रक्षक के रूप में लोकमानस में स्थापित हुए। आधुनिक सिनेमा और टेलीविज़न ने इन्हीं आदर्शों को नए परिधान और कथानक के साथ प्रस्तुत कर सुपरहीरो संस्कृति को जन्म दिया।

कृष (2006) इसका एक जीवंत उदाहरण है। राकेश रोशन द्वारा रचित यह पात्र महज़ विज्ञान-फंतासी नहीं, बल्कि भारतीय मिथकीय परंपरा का आधुनिक संस्करण है। कृष की उड़ान और अलौकिक शक्ति हनुमान की स्मृति जगाती है, वहीं उसका करुणामय और मानवीय पक्ष कृष्ण की छवि से जुड़ता है। इस तरह कृष केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मिथक और आधुनिकता का मेल है, जो भारतीय दर्शकों को पश्चिमी सुपरहीरो से अलग एक सांस्कृतिक पहचान देता है।

इसी कड़ी में 1990 के दशक का चर्चित टीवी धारावाहिक शक्तिमान भारतीय सुपरहीरो संस्कृति का मील का पत्थर रहा। शक्तिमान की शक्ति का स्रोत किसी प्रयोगशाला या एलियन ग्रह से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना और दैवीय ऊर्जा से जुड़ा है। यह स्पष्ट रूप से भारतीय मिथकीय धारणाओं का ही पुनर्पाठ है, जहाँ शक्ति का मूल विज्ञान नहीं, बल्कि धर्म और साधना है।

प्रख्यात आलोचक अशोक वाजपेयी का कथन इस संदर्भ में सार्थक प्रतीत होता है— “लोकप्रिय संस्कृति में मिथक का प्रयोग केवल परंपरा की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि नए सौंदर्यशास्त्र का निर्माण है।” वास्तव में भारतीय सुपरहीरो संस्कृति ने यही किया—उसने मिथकीय आभा को लेकर उसे युवा पीढ़ी की भाषा और तकनीक में ढाल दिया।

इस प्रकार, भारतीय सिनेमा और टेलीविज़न में निर्मित सुपरहीरो न केवल पश्चिमी प्रभाव का उत्तर हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत की नई व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं। वे हमें यह याद दिलाते हैं कि मिथक कभी अतीत का बोझ नहीं, बल्कि भविष्य की ऊर्जा भी बन सकते हैं।

मिथक और राजनीति : भारतीय सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह समय-समय पर राजनीतिक यथार्थ और सामाजिक संघर्षों को भी अपने कथानक में पिरोता रहा है। मिथक यहाँ एक महत्वपूर्ण औज़ार बन जाता है, जिसके माध्यम से जटिल राजनीतिक प्रश्नों को सहज और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

स्वदेश (2004) इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। फिल्म का नायक—एक एन.आर.आई वैज्ञानिक—अमेरिका की सुविधाओं और अवसरों को छोड़कर भारत लौटता है और ग्रामीण समाज के उत्थान में जुट जाता है। यह वापसी केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। इसे देखते हुए कृष्ण की वृंदावन वापसी का मिथकीय प्रसंग स्मरण होता है—जहाँ नायक आधुनिक साधनों से लैस होकर अपने लोगों के बीच लौटता है और उनकी समस्याओं का समाधान करता है। यहाँ मिथक और राजनीति का मेल ग्रामीण विकास, स्वदेशी चेतना और आत्मनिर्भरता के विचार को बल देता है।

इसी तरह लगान (2001) मिथक और राजनीति की अभूतपूर्व संगति है। उपनिवेशवादी सत्ता और गाँववालों के बीच क्रिकेट का मुकाबला केवल खेल नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध धर्मयुद्ध का रूप ले लेता है। महाभारत की छाया इस पूरी कथा पर स्पष्ट दिखाई देती है—जहाँ ग्रामीण अर्जुन की तरह असंभव-सा कार्य करते हैं और भीषण साहस का परिचय देते हैं। बुवाई, अकाल और कर भार की पीड़ा इस संघर्ष को और गहरा बना देती है। इस प्रकार, लगान केवल ऐतिहासिक फिल्म नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध जनांदोलन का मिथकीय रूपक है। प्रख्यात आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं— “मिथक केवल कथा नहीं, वह समाज की चेतना है।” यह कथन स्पष्ट करता है कि भारतीय सिनेमा जब राजनीति और समाज की बात करता है, तो वह मात्र विचारधारा का प्रचार नहीं करता, बल्कि उसे मिथक की शक्ति से जोड़कर लोकमानस में गहराई से उतार देता है।

इस दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय सिनेमा ने मिथक का प्रयोग राजनीति में कभी औपनिवेशिक विरोध, कभी स्वदेशी चेतना, तो कभी समानता और न्याय के संघर्ष के रूपक के रूप में किया है। यह दिखाता है कि मिथक राजनीति के लिए केवल अतीत का संदर्भ नहीं, बल्कि भविष्य के आंदोलन की प्रेरणा भी बन सकता है।

पर्यावरण और मिथक : आधुनिक विश्व की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है—पर्यावरणीय संकट। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और अंधाधुंध उपभोक्तावाद ने न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचाया है, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के सहअस्तित्व की सदियों पुरानी धारणाओं को भी कमजोर कर दिया है। ऐसे समय में, मिथक प्रकृति और संस्कृति के रिश्ते को समझने और पुनर्स्थापित करने का एक सशक्त उपकरण बन जाते हैं।

कन्नड़ फिल्म कांतारा (2022) इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चेतना का सिनेमाई रूपांतरण है। फिल्म में दिखाई देने वाला भूत-कोला अनुष्ठान, स्थानीय देवता और लोककथाएँ केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समुदाय और प्रकृति के संरक्षण का प्रतीक बनकर उभरते हैं। कथा यह स्पष्ट करती है कि जब मनुष्य प्रकृति का संतुलन बिगाड़ता है, तो देवता और लोकविश्वास उसके प्रतिरोध में खड़े हो जाते हैं। यह प्रतिरोध केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतावनी भी है। भारतीय पर्यावरण-चिंतक डॉ. वंदना शिवा लिखती हैं— "भारतीय मिथकों में प्रकृति और संस्कृति का गहरा रिश्ता हमेशा रहा है। जल, जंगल और ज़मीन केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवंत सत्ता हैं।" कांतारा इसी दृष्टि को आगे बढ़ाता है और यह बताता है कि पर्यावरणीय संघर्ष केवल आधुनिक विज्ञान की समस्या नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति और आस्था की धड़कन से भी जुड़ा हुआ है।

वास्तव में, भारतीय मिथकों में प्रकृति को मातृशक्ति के रूप में देखा गया है—गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी नदियाँ; तुलसी, पीपल और वटवृक्ष जैसे वृक्ष; और पशु-पक्षी सभी जीवन के अभिन्न अंग हैं। आधुनिक सिनेमा जब इन प्रतीकों को पुनर्जीवित करता है, तो वह हमें यह याद दिलाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल नीतियों से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता से भी संभव है।

मिथकों की वैश्विकता और भारतीय सिनेमा : मिथकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे स्थानीय होते हुए भी वैश्विक भावनाओं को छूते हैं। प्रत्येक समाज के मिथक अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े होते हैं, लेकिन उनके प्रतीक, संघर्ष और कथानक इतने गहरे होते हैं कि वे सम्पूर्ण मानवता के अनुभव से मेल खाते हैं। यही कारण है कि भारतीय सिनेमा में मिथकों की पुनर्व्याख्या न केवल भारतीय दर्शकों को, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समाज को भी आकर्षित करती है।

बाहुबली इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि आधुनिक मिथकीय गाथा है। इसके पात्र—अमरेंद्र, भल्लालदेव और शिवगामी—प्राचीन भारतीय मिथकों की छवियाँ लिए हुए हैं, लेकिन इनके संघर्ष, महत्वाकांक्षा और बलिदान सार्वभौमिक अनुभव बन जाते हैं। यही कारण है कि बाहुबली की लोकप्रियता भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि अमेरिका, जापान, चीन और यूरोप तक फैल गई। विदेशी दर्शक इसके मिथकीय ढाँचे को पहचान पाते हैं, क्योंकि यह उसी सार्वभौमिक संरचना पर आधारित है जिसे जोसेफ कैंपबेल ने “Hero’s Journey” कहा है। प्रसिद्ध साहित्यकार अम्बिकादत्त शर्मा ने लिखा है— “मिथक की भाषा सार्वभौमिक होती है, क्योंकि वह मानवता की गहराइयों से निकलती है।” भारतीय सिनेमा इसी भाषा को अपनाकर उसे वैश्विक रूप देता है। चाहे बाहुबली जैसी भव्य गाथा हो या कांतारा जैसी लोकमिथकीय कथा—दोनों यह साबित करते हैं कि भारतीय मिथक केवल भारतीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक मानव अनुभव के भी हिस्सेदार हैं।

यही कारण है कि आधुनिक भारतीय सिनेमा वैश्विक मंच पर अपनी अलग पहचान बना रहा है। वह केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि यह दिखाता है कि मिथक कैसे संस्कृतियों के बीच सेतु का काम कर सकते हैं।

निष्कर्ष : आधुनिक भारतीय सिनेमा और मिथकों का संबंध अत्यंत जीवंत, बहुआयामी और गतिशील है। जहाँ कभी मिथक केवल धार्मिक आस्था और परंपरा तक सीमित माने जाते थे, वहीं सिनेमा ने उन्हें नए विमर्शों से जोड़ा है—राजनीतिक संघर्ष, स्त्री विमर्श, पर्यावरणीय चेतना, उपभोक्तावादी संस्कृति और वैश्वीकरण।

आज का दर्शक जब बाहुबली देखता है, तो उसमें केवल एक मनोरंजक कथा नहीं पाता, बल्कि अर्जुन, राम और महाभारत-रामायण की गूंज को भी महसूस करता है। कांतारा स्थानीय मिथक और पर्यावरणीय संतुलन का प्रतीक बनकर सामने आती है, जबकि अहिल्या जैसी फिल्में स्त्री-शक्ति और लैंगिक विमर्श की नई परिभाषा प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार लगान और स्वदेश जैसी कृतियाँ मिथक के सहारे राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों को नए रूप में व्यक्त करती हैं।

इस प्रकार आधुनिक सिनेमा ने मिथक को अतीत की स्थिर स्मृति से निकालकर समकालीन समाज का दर्पण बना दिया है। मिथक अब केवल बीते युग की कथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की चेतना हैं—जो दर्शक को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक संवाद का माध्यम भी बनते हैं। यही कारण है कि भारतीय सिनेमा में मिथक की प्रासंगिकता समय के साथ और भी गहरी और व्यापक होती जा रही है।

"कार्य -जीवन संतुलन"

मोहम्मद अज़हरुद्दीन
सहायक लेखा अधिकारी

"कार्य -जीवन संतुलन" (Work-Life Balance) एक तरह का सिध्दांत है, जो व्यवसायिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन को बनाए रखने का समर्थन करता है।

जिसमें हम यह कह सकते हैं कि 8 घंटे काम, 8 घंटे आराम और 8 घंटे मनोरंजन के लिए दिए जाने पर इसका पालन किया जा सकता है।

कार्य-जीवन संतुलन का मतलब है अपने काम और निजी जीवन दोनों के लिए पर्याप्त समय और ऊर्जा होना। इसका लक्ष्य है कि आप काम में तो अच्छा करें, लेकिन इतने थके हुए या तनाव में भी न हों कि परिवार, अपने शौक या आराम का आनंद न ले पाएं। यह विचार (अवधारणा) लचीले काम के घंटों को बढ़ावा देने के लिए शुरू हुआ था, ताकि लोगों को घर पर अच्छा समय बिताने का मौका मिल सके।

एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन तो प्रायः एक मानक 40-घंटे के सप्ताह में ही रखी जाती है। हालाँकि, बहुत से लोग, खासकर प्राइवेट कंपनियों में, ज़्यादा घंटे काम करते हैं क्योंकि उन्हें पैसों की ज़रूरत होती है। साथ ही, युवा कर्मचारियों पर अक्सर अपने परिवार की उम्मीदों को पूरा करने और सफल होने का दबाव होता है, जिसकी वजह से यह संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है। मेरे ज्ञान के अनुसार, हमारा कार्यालय प्रति सप्ताह लगभग 45 घंटे काम करता है। हमें सप्ताहांत (वीकेंड) की छुट्टी भी मिलती है। यह कार्यालय होमटाउन के लिए लीव ट्रैवल कंसेशन (LTC) और ऑल इंडिया लीव ट्रैवल कंसेशन का लाभ उठाने को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, कई पाठ्येतर (एक्स्ट्राकरिकुलर) गतिविधियाँ आयोजित भी की जाती हैं और उनमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। ये सभी प्रयास सिर्फ कार्य-जीवन संतुलन (वर्क-लाइफ बैलेंस) बनाए रखने के लिए किए जाते हैं।

"काम से पैसे बनाओ, और निजी जीवन से प्यार ,
इसकी संतुलन बनाए रखो, यही है संसार।

कार्य-जीवन संतुलन का महत्व: आज की तेज़-तर्रार ज़िंदगी में, काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना बेहद ज़रूरी हो गया है। लंबे काम के घंटे, तनाव और व्यक्तिगत जीवन की अनदेखी सेहत और खुशहाली पर बुरा प्रभाव डालते हैं। आइए समझते हैं कि वर्क-लाइफ बैलेंस क्यों महत्वपूर्ण है: "स्वास्थ्य ही सच्चा धन है" - यह कहावत हम बचपन से सुनते आए हैं, परंतु इसका वास्तविक महत्व तब समझ आता है जब शारीरिक या मानसिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हालाँकि डॉक्टर और स्वास्थ्य विशेषज्ञ नियमित व्यायाम एवं संतुलित जीवनशैली पर बल देते हैं, फिर भी अधिकांश लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते। इसी को ध्यान में रखते हुए, हमारा कार्यालय कर्मचारियों के समग्र कल्याण हेतु योग दिवस जैसे कार्यक्रम आयोजित करता है, जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने में सहायक हैं। इसके अतिरिक्त, तनाव मुक्ति एवं मनोरंजन हेतु विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है। ये सभी पहल हमारे कर्मचारियों के बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से की जाती हैं।

पारिवारिक जीवन और कार्य-जीवन संतुलन: एक संतुलित कार्य-जीवन हमारे पारिवारिक रिश्तों को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, जहाँ अक्सर काम के लंबे घंटे हमारे व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, वहाँ परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना एक चुनौती बन जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके बच्चे का जन्मदिन हो और आप उसकी पार्टी में शामिल न हो पाएँ क्योंकि आप कार्यालय में व्यस्त हैं या भविष्य के लिए छुट्टियाँ बचा रहे हैं, तो यह न केवल आपके बच्चे को निराश करता है बल्कि आपके लिए भी एक पछतावे का कारण बन सकता है। हालाँकि कुछ लोगों के लिए यह स्थिति सामान्य हो सकती है, लेकिन भारतीय संस्कृति में परिवार के साथ जुड़ाव और साझा पलों का विशेष महत्व है। इसलिए, कार्य और निजी जीवन के बीच सही संतुलन बनाकर हम न केवल अपने करियर में सफल हो सकते हैं बल्कि अपने प्रियजनों के साथ खुशहाल रिश्ते भी कायम रख सकते हैं।

शौक, जुनून और जीवन के लक्ष्य के लिए समय निकालें: जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए केवल काम और नींद ही पर्याप्त नहीं हैं। जब हमारे पास दिन में 2-4 घंटे का अतिरिक्त समय हो (नींद, कार्य और घरेलू दायित्वों के बाद), तो यह समय हमारे शौक, जुनून और जीवन के लक्ष्यों को पूरा करने में लगाना चाहिए। चाहे वह संगीत सीखना हो, व्यायाम करना हो, किताबें पढ़ना हो या कोई नया कौशल सीखना हो - ये गतिविधियाँ न केवल हमें तनावमुक्त करती हैं बल्कि हमारे व्यक्तित्व को भी निखारती हैं। दुर्भाग्य से, आजकल अधिकांश लोग इस कीमती समय को टेलीविजन देखने या सोशल मीडिया पर अंतहीन रील्स स्क्रॉल करने में बर्बाद कर देते हैं, जो न तो हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है और न ही जीवन में कोई सार्थक योगदान देता है। याद रखें, यह अतिरिक्त समय हमारे जीवन को समृद्ध बनाने का एक सुनहरा अवसर है - इसे अपने विकास, रचनात्मकता और दीर्घकालिक खुशी के लिए उपयोग में लाएं। आखिरकार, एक संतुलित और सार्थक जीवन वही है जहाँ काम के साथ-साथ हमारे व्यक्तिगत सपने और आकांक्षाएँ भी पूरी होती हैं।

प्रौद्योगिकी का प्रभाव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)AI पर अत्यधिक निर्भरता: आधुनिक तकनीक ने काम करने के लचीले तरीके (जैसे घर से काम) को मुमकिन बनाया है। मगर इसकी वजह से काम और निजी जीवन के बीच का फर्क भी कम हो गया है। स्मार्टफोन, ई-मेल और व्हाट्सअप्प संदेश प्लेटफॉर्म कर्मचारियों को काम के घंटों के बाद भी कार्य से जोड़े रखते हैं, जिससे उनके लिए स्वयं को डिस्कनेक्ट कर पुनर्जीवित होना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। कार्य और निजी जीवन के बीच की यह धुंधली सीमा तनाव और बर्नआउट को बढ़ावा देती है, जिससे वर्क-लाइफ बैलेंस का मूल उद्देश्य ही प्रभावित होता है।

इसके अलावा, AI टूल्स पर बढ़ती निर्भरता नए चिंताएँ पैदा कर रही है। जहाँ AI ने कार्यक्षमता और सुविधा को बढ़ाया है, वहीं इसका अत्यधिक उपयोग मानवीय कौशल, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं में गिरावट का कारण बन रहा है। कई कर्मचारी अब निर्णय लेने या जटिल समस्याओं का हल निकालने में AI पर इतना अधिक निर्भर हो गए हैं कि उनकी स्वयं की सोचने-समझने की क्षमता कमजोर होती जा रही है। साथ ही, यदि AI सिस्टम में खराबी आ जाए या ये काम करना बंद कर दें, तो इससे संगठनों की कार्यप्रणाली पूरी तरह से ठप हो सकती है, जिससे गंभीर व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं।

इसलिए, यह आवश्यक है कि हम प्रौद्योगिकी और AI का उपयोग सहायक उपकरण के रूप में करें, न कि पूर्ण रूप से इन पर निर्भर हो जाएँ। मानवीय कौशलों को निरंतर विकसित करना और तकनीक के साथ एक संतुलन बनाए रखना ही दीर्घकालिक सफलता और स्वस्थ कार्य संस्कृति की कुंजी है।

स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन का महत्व: निस्संदेह, आज के समय में काम और ज़िंदगी के बीच संतुलन बनाना बहुत ज़रूरी है। इसका मतलब है काम की ज़िम्मेदारियों और अपनी निजी व पारिवारिक ज़रूरतों के बीच तालमेल बैठाना। अगर हम अपना ख्याल रखें, काम के लिए एक सीमा तय करें और अपने समय का सही इस्तेमाल करें, तो इससे हमारा तनाव कम होगा, काम करने की क्षमता बढ़ेगी और हमारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा। ऐसा संतुलित जीवन न सिर्फ़ काम में खुशी देता है, बल्कि रिश्तों को मज़बूत करके जीवन को और भी ज्यादा खुबसूरत और अर्थपूर्ण बना देता है।

यह समझना ज़रूरी है कि असली सफलता केवल पद या वेतन में नहीं, बल्कि एक संतुलित, खुशहाल और तनावमुक्त जीवन में निहित है। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हम अक्सर पेशेवर सफलता को ही जीवन की सफलता मान बैठते हैं और परिवार के साथ बिताए गए कीमती पलों, दोस्तों के साथ साझा की गई हँसी तथा खुद पर बिताए गए पल के महत्व को भूल जाते हैं। इसलिए, work-life balance के महत्व को पहचानते हुए छोटी-छोटी आदतों और सही योजना के ज़रिए इसे अपनाया जा सकता है और एक संतुलित, सुखद जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।

(यात्रा वृत्तान्त)

एक यादगार यात्रा की कहानी – नीलगिरी (ऊटी तमिलनाडु) की गोद में

संदीप कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

"चलो कहीं घूमने चलते हैं..." — यह विचार हमारे मन में काफी समय से चल रहा था। मैं और मेरे एक मित्र अपने-अपने परिवारों के साथ कुछ दिन पहाड़ों की ठंडी हवा में समय बिताने का निर्णय लिया। इस बार हमने गंतव्य चुना — दक्षिण भारत का स्वर्ग, ऊटी।

हमारी यात्रा की शुरुआत विजयवाड़ा से हुई। हमने विजयवाड़ा से कोयंबटूर तक ट्रेन से सफर किया, फिर वहां से मेट्टुपालयम तक एक्सप्रेस ट्रेन से पहुँचे। सुबह-सुबह मेट्टुपालयम स्टेशन पर हल्की ठंडक और एक शांत वातावरण हमारा स्वागत कर रहा था। वहाँ खड़ी छोटी-सी नीली-पीली ट्रेन को देखकर ऐसा लग रहा था मानो हम किसी पुराने चलचित्र का हिस्सा बन गए हों। इसके बाद शुरू हुआ हमारे जीवन का सबसे सुंदर और फिल्मी सफर - मेट्टुपालयम से ऊटी तक नीलगिरि माउंटेन रेलवे की टॉय ट्रेन यात्रा - जिसमें हर मोड़ पर प्रकृति ने अपना जादू बिखेरा - चाय के बागान, पहाड़ियों की हरियाली और ठंडी हवा ने पूरे रास्ते को रोमांचक और यादगार बना दिया। जैसे ही ट्रेन ने सीटी दी और चल पड़ी, हर डिब्बे से उत्साह की आवाज़ें आने लगीं। बच्चे खिड़की से झांकते, बड़े झूमते -और हम सब प्रकृति की इस गोद में खोते चले गए। छुक-छुक करती चल पड़ी ट्रेन जैसे ही चली, हर डिब्बे से उत्साह की आवाज़ें आने लगीं - बच्चे खिड़की से झांक रहे थे । जैसे-जैसे गाड़ी ऊँचाइयों की ओर बढ़ी, वैसे-वैसे मौसम ठंडा होता गया और चारों ओर हरियाली छा गई। रास्ते में 36 घुमावदार मोड़ थे, जिन्हें पार करना रोमांचक भी था और थोड़ा डरावना भी । इस पूरे सफर ने जैसे हमें एक दूसरी ही दुनिया में पहुँचा दिया।

ऊटी में पहला दिन:

ऊटी की सुबहें कुछ अलग होती हैं — बादलों में डूबी वादियाँ, ठंडी हवा और चाय की सुगंध। हमने होटल में चेक-इन किया और थोड़ी देर आराम के बाद सीधे पहुँचे ऊटी झील। यहाँ बोटिंग का आनंद लिया और झील के किनारे गरमागरम मकई और चाय का स्वाद लिया। शाम को हमने स्थानीय बाजार में घूमते हुए कुछ खूबसूरत यादें खरीदीं — ऊनी कपड़े, लकड़ी के खिलौने और हस्तशिल्प की चीज़ें।

ऊटी आने वाले पर्यटकों के लिए 'चाय और चॉकलेट फैक्ट्री' भी विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। ऊटी की चाय फैक्ट्री में पर्यटकों को चाय बनाने की पूरी प्रक्रिया को देखने का अवसर मिलता है — जैसे कि चाय की पत्तियों की तोड़ाई, सुखाई, पीसाई और पैकिंग। फैक्ट्री के साथ एक 'टी म्यूज़ियम' भी होता है, जहाँ चाय का इतिहास और इसके विभिन्न प्रकारों के बारे में जानकारी मिलती है। यहां की 'चाय फैक्ट्री' में विभिन्न प्रकार की चाय जैसे ग्रीन टी, मसाला टी और फ्लेवर टी तैयार की जाती है। पर्यटक यहां चाय उत्पादन की प्रक्रिया को नजदीक से देख सकते हैं और ताजगी से भरी चाय का स्वाद भी ले सकते हैं।

वहीं, 'चॉकलेट फैक्ट्री' ऊटी की एक और खास पहचान है। यहां हाथ से बनी हुई मिल्क चॉकलेट, डार्क चॉकलेट, नट्स चॉकलेट आदि उपलब्ध हैं। इन चॉकलेट्स का स्वाद शुद्धता और गुणवत्ता में बेजोड़ होता है।

इन दोनों फैक्ट्रियों का दौरा न केवल ज्ञानवर्धक होता है, बल्कि यह एक स्वादिष्ट अनुभव भी होता है। परिवारों और बच्चों के लिए यह जगह बेहद रोचक होती है। ऊटी आने वाले पर्यटक इन फैक्ट्रियों से स्वादिष्ट चाय और चॉकलेट खरीदना नहीं भूलते।

ऊटी में दूसरा दिन :

दूसरे दिन की शुरुआत बोटैनिकल गार्डन से हुई। वहाँ की हरियाली, रंग-बिरंगे फूल और शांत वातावरण ने मन मोह लिया। इसके बाद हमने ऊटी के प्रसिद्ध व्यू पॉइंट्स पर जाकर ऊँचाइयों से बादलों के खेल को देखा। यह दिन शांति और प्रकृति के अद्भुत संगम से भरा रहा।

ऊटी में तीसरा दिन :

हमारी ऊटी यात्रा का तीसरा दिन सबसे रोमांचक था। आज हमने पायकारा झरना देखने का निर्णय लिया। ऊटी से पायकारा की दूरी लगभग 20 किलोमीटर है, लेकिन रास्ता इतना खूबसूरत था कि सफर कब बीत गया, पता ही नहीं चला।

पायकारा झरने के पास हमने गरम कॉफी और मैगी का आनंद लिया। झरने की गूंज और ठंडी हवा ने यात्रा को बेहद खास बना दिया।

संक्षिप्त यात्रा - कोयंबटूर में आदियोगी शिव का दर्शन :

ऊटी से वापसी करते समय हमने कोयंबटूर के पास स्थित ईशा योग केंद्र जाने का मन बनाया। यह स्थान ऊटी से करीब 110 किलोमीटर दूर है। घाटियों और जंगलों से होकर शाम को वहाँ पहुँचे और 112 फीट ऊँची आदियोगी शिव प्रतिमा के दर्शन किए।

शांत और आध्यात्मिक वातावरण में ध्यानलिंग, नाद आराधना और प्राणायाम हॉल का अनुभव किया। शाम 7 बजे होने वाले 'आदियोगी दिव्य दर्शनम' लेज़र शो में शिव की जीवनगाथा और योग की महिमा को अद्भुत रोशनी और ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जो आत्मा को छू लेने वाला अनुभव था।

यात्रा का समापन - यादें और मुस्कानें :

अगले दिन हम कोयंबटूर रेलवे स्टेशन से विजयवाड़ा के लिए रवाना हुए। हाथ में कुछ स्मृतियाँ थीं, मन में शांति, और दिल में वो सुंदर दृश्य — नीलगिरियों की वादियाँ, टॉय ट्रेन की सीटी, पायकारा की ठंडक और आदियोगी की विशालता। यह यात्रा सिर्फ एक सफर नहीं, बल्कि जीवन भर की याद बन गई।

(यात्रा वृत्तान्त)

केरल डायरीज़

श्रीमति चित्रलेखा,
वरिष्ठ अनुवादक

एक दिन बहुत सलाह-मशविरा करने के बाद हमने केरल घूमने का प्लान बनाया और बस निकल पड़े हम एक खुशनुमा सफर पर।

केरल, जिसे 'ईश्वर का अपना घर' कहा जाता है, अपने धार्मिक स्थलों से अधिक अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। सुंदरता भी ऐसी कि जिसे देखते ही हम समझ गए कि ईश्वर का घर वाकई में ऐसा ही होता होगा। केरल का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर एक बार को तो यूँ लगा कि ईश्वर का घर भी इससे अधिक खुबसूरत न होगा। तो आइए, आपको ले कर चलें हमारे इस खुबसूरत सफर पर।

हमने अपना सफर दिल्ली से शुरू किया। दिल्ली से फ्लाइट लेकर हम सीधा पहुँचे तिरुवनंतपुरम्। तिरुवनंतपुरम् ईश्वर के घर यानी केरल राज्य की राजधानी है। तिरुवनंतपुरम् एयरपोर्ट से निकल कर हम पहले से ही बुक की हुई कैब में बैठे और पहुँच गए कन्याकुमारी।

पहला दिन – कन्याकुमारी, विवेकानन्द रॉक मैमोरियल, तिरुवल्लुवर प्रतिमा :

कन्याकुमारी पोर्ट से फैरी लेकर हम पहले पहुँचे विवेकानन्द रॉक मैमोरियल। विवेकानन्द रॉक मैमोरियल समुद्र तट से पचास फुट ऊंचाई पर निर्मित भव्य और विशाल प्रस्तर कृति है जिसे भूमि-तट से लगभग ५०० मीटर अन्दर समुद्र में स्थित दो चट्टानों में से एक के उपर निर्मित किया गया है।

विवेकानन्द रॉक मैमोरियल से वापसी की फैरी लेकर एक बार फिर हम पहुँचे कन्याकुमारी पोर्ट, जहाँ हमने दर्शन किए तिरुवल्लुवर प्रतिमा के। तिरुवल्लुवर प्रतिमा, तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर की एक 41 मीटर ऊंची (133 फीट) पत्थर की मूर्ति है। यह प्रतिमा कन्याकुमारी के पास एक छोटे से द्वीप के ऊपर स्थित है।

कन्याकुमारी से हम अपने होटल पहुँच कर हमने चैक-इन किया और आने वाले दिन में नए सफर के सुनहरे सपनों में खो गए यानी गहरी नींद में सो गए।

दूसरा दिन – एलेप्पी :

एलेप्पी, जिसे अलाप्पुझा के नाम से भी जाना जाता है, केरल राज्य में स्थित एक खूबसूरत शहर है। एलेप्पी को अपने सुन्दर बैकवॉटर, समुद्री बीच और लैगून की वजह से 'पूर्व का वेनिस' भी कहा जाता हैं।

शांत बैकवॉटर से गुज़रने वाले हाउस बोट परिभ्रमण के लिए भी एलेप्पी को जाना जाता हैं। तो बस एलेप्पी की इसी खासियत को आज़माने के लिए हमने हाउसबोट से बैकवॉटर में जाने की सोची और यकीन मानिए मेरे इस एक फैसले से हमारा केरल का टूर और भी खुशनुमा बन गया।

हुआ यूँ, कि जैसे ही हम बैकवॉटर में जाने के लिए हाउसबोट में बैठे वैसे ही बारिश शुरू हो गई। चारों ओर पानी ही पानी, पानी में खिलते हुए कमल के सैकड़ों फूल और आसमान से दूर तक फैले पानी में गिरती हुई बूँदे। नज़ारा ऐसा कि नज़रें ही न हटें। बस, उस नज़ारे को देखते हुए ही हमने हाउसबोट पर स्वादिष्ट खाना खाया और एक बार फिर से अगले दिन एक नए सफर पर जाने के लिए खुद को तरोताज़ा रखने के लिए हम प्रकृति की उन हसीन वादियों में सो गए।

तीसरा दिन - थेक्कडी (मसाला बागान, मुल्लापेरियार बाँध, पेरियार झील, पेरीयार राष्ट्रीय उद्यान, थेक्कडी रोज़ पार्क, लोक नृत्य-नाटक 'कथकली', दुनिया की सबसे पुरानी मार्शल आर्ट 'कलरीपायट्टु')

एक पूरा दिन और पूरी रात हाउसबोट पर बिताने के बाद अगले दिन हम थेक्कडी पहुँचे। थेक्कडी केरल राज्य में स्थित एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, वन्य जीवन और मसालों के बागानों के लिए जाना जाता है।

पहले से ही बुक किए हुए होटल में चैक-इन करने के बाद अपनी प्राकृतिक सुंदरता, वन्य जीवन और मसालों के बागानों के लिए जाने वाले थेक्कडी में हमने सबसे पहले हाथी की सवारी का आनंद लेते हुए मसालों के बागानों का मुआयना किया।

मसालों के बागानों से निकल हम पहुँचे पेरियार नदी पर बने मुल्लापेरियार बाँध पर, जो एक चिनाई गुरुत्वाकर्षण बाँध (a masonry gravity dam) है।

मुल्लापेरियार बाँध देखने के बाद हमने पेरियार झील में नौका विहार का आनंद लेते हुए पेरियार राष्ट्रीय उद्यान देखा किंतु हमारी बदकिस्मती यह रही कि नौका-विहार के दौरान कोई भी जानवर हमें नज़र नहीं आया।

पेरीयार राष्ट्रीय उद्यान में कोई भी जानवर न देख पाने का अफसोस लिए हम वहाँ से पहुँचे थेक्कडी रोज़ पार्क जो राष्ट्रीय उद्यान से केवल 5 किमी दूरी पर स्थित है। यहाँ हमें विभिन्न रंगों के गुलाबों के अलावा अन्य फूलदार पौधे भी देखने को मिले।

थेक्कडी रोज़ पार्क से होटल वापस आकर थोड़ा आराम करने के बाद शाम को हम पहुँचे केरल का लोक-नृत्य 'कथकली' देखने। 'कथकली' केरल का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य-नाटक है, जो भारतीय महाकाव्यों की कहानियों पर आधारित है। इसमें संगीत, नृत्य और अभिनय का मिश्रण होता है, और कलाकार विस्तृत वेशभूषा और श्रृंगार के साथ विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हैं।

वहाँ से हम दुनिया के सबसे पुराने मार्शल आर्ट 'कलरीपायट्टु' देखने गए। 'कलरी' का अर्थ है 'युद्ध का मैदान' और 'कलरीपायट्टु' का अर्थ है 'युद्ध के मैदान की कला'। 'कलरीपायट्टु' को सभी मार्शल आर्ट्स की जननी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि जिस कुंग फू (Kung fu) के दुनियाभर में ढेरों दीवाने हैं उसका जन्म भी इसी कला से हुआ था।

जहाँ एक ओर केरल के प्रसिद्ध लोक नृत्य-नाटक 'कथकली' को देखकर हमें बड़ा ही आनंद आया। वहीं दूसरी ओर दुनिया के सबसे पुराने मार्शल आर्ट 'कलरीपायट्टु' को देखकर हम एक नए जोश से भर गए। पर हमने जोश में होश न गँवाए और पूरे होशो-हवास में होटल के अपने रूम में आकर सो गए।

चौथा दिन – मुन्नार :

चाय के बागानों की शुरुआत और विकास होने की बात होती है तो मून्नार की अपनी विरासत है। इस विरासत के बारे में जानने और केरल के ऊंचे इलाकों में चाय के बागान की शुरुआत और विकास के रोचक पहलुओं के बारे में जानने के लिए हम पहुँचे चाय के म्यूज़ियम (चाय का संग्रहालय), जिसे टाटा टी द्वारा कुछ वर्ष पहले ही खोला गया है। चाय के इस संग्रहालय में कलाकृतियाँ, तस्वीरें और मशीनरी रखे गए हैं, जिनकी मदद से यह जाना जा सकता है कि घर-घर में बनने वाली और बड़े शौक से पी जाने वाली चाय आखिर बनती और घर-घर पहुँचती कैसे है। चाय के बागानों के विकास और चाय की पत्ती तैयार करने की प्रक्रिया को देखना, चाय पीने से भी अधिक मज़ेदार रहा।

अगले दिन केरल का यह खुशनुमा सफर खत्म होने वाला था, तो हम वहाँ बनाई नई यादों को अपने साथ संजोकर अपने घर वापसी की तैयारी कर मीठे सपनों में खो गए और चैन से सो गए।

पाँचवा दिन – मुन्नार से कोच्चि हवाईअड्डा :

सवेरा होने पर जागे तो होटल से चेक-आउट कर मुन्नार से अपने आखिरी पड़ाव यानी कोट्टि हवाईअड्डे की ओर निकल पड़े, जहाँ से हवाई-यात्रा करते हुए कुछ ही समय में दिलवालों की नगरी 'दिल्ली' पहुँच गए।

सायोनारा.. फिर मिलेंगे एक नए सफरनामे के साथ।

विजयवाड़ा- आंध्र प्रदेश की व्यापारिक राजधानी

ज्ञान प्रकाश
लेखाकार

विजयवाड़ा, जिसे प्रायः "आंध्र प्रदेश की व्यापारिक राजधानी" कहा जाता है, दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक है। यह पवित्र कृष्णा नदी के किनारे बसा हुआ है और पूर्वी घाट की इंद्रकीलाद्रि पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जिसके कारण इसे प्राकृतिक वैभव और सामरिक महत्व प्राप्त है। शहर का नाम "विजय का स्थान" है, जो पौराणिक कथाओं से जुड़ा हुआ है। किंवदंती है कि देवी कनक दुर्गा ने इंद्रकीलाद्रि पर्वत पर राक्षस महिषासुर का वध कर यहाँ शांति स्थापित की थी। तभी से कनक दुर्गा मंदिर इस शहर का सबसे प्रमुख चिह्न बन गया है, जो विशेषकर दशहरा (नवरात्रि) के समय लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। एक अन्य पौराणिक संबंध महाभारत से है, जहाँ कहा जाता है कि अर्जुन ने यहीं तपस्या कर भगवान शिव से पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया था।

इतिहास की दृष्टि से भी विजयवाड़ा संस्कृति और वाणिज्य का केंद्र रहा है। उंडावल्ली गुफाएँ, जिन्हें चौथी-पाँचवीं शताब्दी में ठोस शिलाओं को काटकर बनाया गया था, गुप्तकालीन स्थापत्य शैली का अद्भुत उदाहरण हैं और इनमें शेषनाग पर लेटे भगवान विष्णु की विशाल प्रतिमा विशेष प्रसिद्ध है। यह शहर सातवाहन, चालुक्य और विजयनगर साम्राज्यों के शासन में भी फला-फूला और प्रत्येक ने यहाँ अपनी सांस्कृतिक छाप छोड़ी। औपनिवेशिक काल में विजयवाड़ा रेल और सड़क परिवहन का बड़ा केंद्र बना, जिससे इसका विकास और भी तीव्र हुआ।

भौगोलिक रूप से, विजयवाड़ा उपजाऊ भूमि पर बसा है, जिसे कृष्णा नदी सींचती है। 1957 में निर्मित प्रकाशम बैराज ने इस क्षेत्र का स्वरूप बदल दिया, जिससे विशाल कृषि भूमि को पानी मिला और क्षेत्र की समृद्धि सुनिश्चित हुई। यह बैराज स्वयं में एक दर्शनीय स्थल है और शहर की इंजीनियरिंग क्षमता का प्रमाण है। इसके निकट ही भवानी द्वीप स्थित है, जो भारत के सबसे बड़े नदी द्वीपों में से एक है और अब मनोरंजन एवं ईको-टूरिज़्म का केंद्र है।

संस्कृति की दृष्टि से विजयवाड़ा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह शास्त्रीय नृत्य, संगीत, नाटक और पारंपरिक कलाओं के लिए प्रसिद्ध है। तेलुगु फ़िल्म उद्योग का भी यहाँ गहरा प्रभाव रहा है। दशहरा, दीवाली, उगादी और संक्रांति जैसे त्यौहार यहाँ बड़े हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं। यहाँ का व्यंजन अपने तीखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें पुलिहारा (इमली चावल), पेसरट्टु, आंध्रा बिरयानी और गोंगुरा पचड़ी विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। पास के क्षेत्रों से आने वाले आम, विशेषकर बंगिनापल्ली और तोतापुरी, बड़ी मात्रा में निर्यात किए जाते हैं।

आर्थिक दृष्टि से विजयवाड़ा वस्त्र, कृषि, ऑटोमोबाइल और शिक्षा का प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। यह आंध्र प्रदेश कैपिटल रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी (APCRDA) का महत्वपूर्ण हिस्सा है और राज्य की नियोजित राजधानी अमरावती के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। रेल, सड़क और हवाई मार्ग की बेहतर सुविधाओं के कारण इसे "आंध्र प्रदेश का प्रवेश द्वार" भी कहा जाता है।

पर्यटन के क्षेत्र में विजयवाड़ा आध्यात्मिकता, इतिहास और आधुनिक मनोरंजन का अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैं — कनक दुर्गा मंदिर, प्रकाशम बैराज, भवानी द्वीप, उंडावल्ली गुफाएँ, गांधी हिल (गांधी स्मारक सहित), हज़रत बल मस्जिद, राजीव गांधी पार्क और विक्टोरिया म्यूज़ियम। शहर पास के अन्य दर्शनीय स्थलों जैसे मंगलगिरि, अमरावती, कोंडापल्ली किला और कुचिपुड़ी गाँव (विश्वविख्यात नृत्य शैली का जन्मस्थान) तक जाने का भी प्रमुख केंद्र है।

मूलतः, विजयवाड़ा केवल एक शहर नहीं बल्कि पौराणिक भव्यता, ऐतिहासिक गहराई, सांस्कृतिक समृद्धि और आधुनिक गतिशीलता की जीवंत धरोहर है। यह आंध्र प्रदेश की दृढ़ता और प्रगति का प्रतीक है और परंपरा व विकास का अद्भुत संतुलन प्रस्तुत करता है।

अमरावती के संग्रहालय का चित्र

बोब्बिली युद्ध

सुनील रुत्तला
लेखाकार

आंध्र प्रदेश के इतिहास के सबसे वीरतापूर्ण और अविस्मरणीय क्षणों में से एक है बोब्बिली युद्ध, जो 1757 में लड़ा गया था। यह युद्ध बोब्बिली संस्थान के लोगों के अद्वितीय साहस, बलिदान और देशभक्ति को दर्शाता है। वर्तमान विजयनगरम ज़िले की एक छोटी-सी रियासत होने के बावजूद, बोब्बिली योद्धाओं की बहादुरी आज तक लोगों की स्मृतियों में जीवित है।

इस युद्ध की जड़ें दो रियासतों — बोब्बिली और विजयनगरम — की प्रतिद्वंद्विता में निहित थीं। 18वीं शताब्दी में दोनों वंश उत्तरी सरकारों (Northern Circars) पर प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रहे थे। उसी समय, फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी के सेनापति मार्क्विस डी बुसी ने तटीय आंध्र पर अपना प्रभाव जमा लिया था। विजयनगरम के राजा पेद्दा विजयरामराजु ने बोब्बिली से अपने संघर्ष को सुलझाने के लिए फ्रांसीसियों से सहायता मांगी। यह गठबंधन अंततः बोब्बिली पर आक्रमण का कारण बना।

23 जनवरी 1757 को, जनरल बुसी फ्रांसीसी सैनिकों और विजयनगरम की सेना के साथ बोब्बिली किले की ओर बढ़ा। बोब्बिली के राजा गोपालकृष्ण रंगा राव और उनके सैनिकों ने किले के भीतर से अपनी भूमि की रक्षा के लिए तैयारी की। संख्या और हथियारों में अत्यंत कमज़ोर होने के बावजूद, बोब्बिली के सैनिकों ने असाधारण साहस का परिचय दिया। उन्होंने विजयनगरम की सेना और फ्रांसीसी तोपख़ाने का जमकर सामना किया, लेकिन धीरे-धीरे किला शत्रुओं के हाथों में जाने लगा।

जब हार निश्चित हो गई, तो बोब्बिली की महिलाओं ने अपमान की बजाय मृत्यु को चुना और जौहर (आत्मदाह द्वारा सामूहिक आत्महत्या) किया। सैनिकों ने भी अंतिम सांस तक युद्ध किया और आत्मसमर्पण की बजाय बलिदान को वरीयता दी। राजा रंगा राव रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए, लेकिन उनकी विरासत आज भी सम्मान का प्रतीक है।

बोब्बिली किला

इस युद्ध के सबसे महान नायकों में से एक थे तंद्र पापारायुडु, जो बोब्बिली के सेनापति थे। अपने राज्य के विनाश और राजा की मृत्यु से शोकाकुल होकर उन्होंने प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। एक साहसिक कृत्य में उन्होंने विजयनगरम के राजा पेद्दा विजयरामराजु की हत्या कर दी और फिर स्वयं बलिदान कर दिया। उनकी वीरता ने उन्हें एक दंतकथा बना दिया, जो आज भी तेलुगु लोककथाओं, गीतों और कवित्तों में अमर है।

बोब्बिली युद्ध को पराजय के रूप में नहीं, बल्कि बलिदान और सम्मान की गाथा के रूप में याद किया जाता है। इसने दिखा दिया कि संसाधनों में सीमित एक छोटा-सा राज्य भी दृढ़ संकल्प और साहस के बल पर बड़ी शक्तियों को चुनौती दे सकता है। इस युद्ध ने यह भी उजागर किया कि किस प्रकार फ्रांसीसियों जैसे यूरोपीय शक्तियाँ स्थानीय प्रतिद्वंद्विताओं का अपने लाभ के लिए उपयोग कर रही थीं।

आज भी बोब्बिली युद्ध की विरासत इतिहास, साहित्य और जनमानस में जीवित है। यद्यपि बोब्बिली किला ध्वस्त हो चुका है, फिर भी वह इस महान बलिदान का प्रतीक बना हुआ है। तंद्र पापारायुडु जैसे नायकों की प्रतिमाएँ और स्मारक आज भी आंध्र प्रदेश की जनता के हृदयों को उनकी निष्ठा और वीरता की कहानियों से आंदोलित करते हैं।1757 का बोब्बिली युद्ध आंध्र प्रदेश के इतिहास का एक उज्ज्वल अध्याय है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची विजय केवल युद्ध जीतने में नहीं, बल्कि साहस, गरिमा और बलिदान को बनाए रखने में है। बोब्बिली की आत्मा आज भी तेलुगु गर्व और घनताका प्रतीक है।

बोब्बिली युद्ध स्मारक

बोब्बिली युद्ध स्मारक पर शिलालेख

मिट्टी के बर्तनों का लोप और उनके संरक्षण के उपाय

मुलगापक संन्यासी राव
लेखाकार

मिट्टी के बर्तन मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन खोजों में से एक हैं, जिन्होंने हजारों वर्षों से संस्कृति, कला और दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मेसोपोटामिया, मिस्र और सिंधु घाटी जैसी प्राचीन सभ्यताओं में मिट्टी के बर्तन केवल भोजन और पानी के भंडारण का साधन नहीं थे, बल्कि संवाद, कहानी कहने और परंपराओं को आगे बढ़ाने का माध्यम भी थे। किंतु आज के युग में औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण यह कला विलुप्त होने के कगार पर है।

मिट्टी के बर्तनों का पतन कई कारणों से हुआ है। सबसे पहले, प्लास्टिक, कांच और धातु के बर्तनों के औद्योगिक उत्पादन ने मिट्टी के बर्तनों की मांग को बहुत कम कर दिया है। ये विकल्प सस्ते, अधिक टिकाऊ और बड़ी मात्रा में आसानी से उपलब्ध हैं, जिससे उपभोक्ताओं के लिए ये सुविधाजनक लगते हैं। दूसरा, नई पीढ़ी पारंपरिक पेशों की बजाय ऐसे रोजगार चुन रही है, जिनमें अधिक आय और स्थिरता मिलती है। परिणामस्वरूप, कुशल कुम्हारों की संख्या घटती जा रही है। शहरीकरण के कारण प्राकृतिक मिट्टी की उपलब्धता और भट्ठों के लिए स्थान भी सीमित हो गया है, जिससे कुम्हार अपने पेशे से विमुख हो रहे हैं। अंत में, सरकार और समाज से पर्याप्त सहयोग न मिलने के कारण अनेक कुम्हार आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं।

मिट्टी के बर्तनों का लोप केवल एक पेशे का अंत नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर का ह्रास भी है। हर बर्तन की आकृति, डिज़ाइन और अलंकरण में स्थानीय परंपराएँ, रीति-रिवाज और इतिहास की झलक मिलती है। साथ ही यह प्लास्टिक की तुलना में अधिक पर्यावरण-अनुकूल है, क्योंकि मिट्टी के बर्तन जैविक रूप से नष्ट हो जाते हैं और प्रदूषण नहीं फैलाते। अतः मिट्टी के बर्तनों का लोप एक ऐसे टिकाऊ जीवन-प्रयोग का भी अंत है, जो कभी मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य बनाए रखता था।

मिट्टी के बर्तनों को पुनर्जीवित करने के लिए व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं को मिलकर प्रयास करना होगा। सरकार आर्थिक सहयोग, कौशल-विकास कार्यशालाएँ और विपणन के अवसर उपलब्ध कराकर इसमें अहम भूमिका निभा सकती है। विद्यालयों और व्यावसायिक प्रशिक्षण में कुम्हारकला को शामिल करने से नई पीढ़ी में रुचि पैदा होगी। पर्यटन भी इसमें सहायक हो सकता है, क्योंकि हाथ से बने शिल्प विदेशी और देशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और कारीगरों को आय का साधन देते हैं। आधुनिक डिज़ाइनर और उद्यमी पारंपरिक कुम्हारों के साथ मिलकर ऐसे नवीन उत्पाद तैयार कर सकते हैं, जो परंपरा और आधुनिकता दोनों की माँग को पूरा करें। साथ ही, मिट्टी के बर्तनों को प्लास्टिक के पर्यावरण-अनुकूल विकल्प के रूप में प्रचारित करने से उपभोक्ताओं की रुचि फिर से बढ़ाई जा सकती है।

मिट्टी का बर्तन केवल आकार दिया हुआ घड़ा या पात्र नहीं है, बल्कि यह एक जीवित परंपरा है जो हमें हमारी धरोहर और धरती से जोड़ती है। इसका लोप हमें न केवल एक कला से वंचित करेगा, बल्कि एक टिकाऊ शिल्प से भी दूर कर देगा। यदि इसे उचित मान्यता, प्रोत्साहन और आधुनिक ज़रूरतों के अनुसार ढाला जाए, तो यह कला आने वाली पीढ़ियों में भी जीवित रह सकती है।

(कहानी)

सपनों की उड़ान

रोनित बंदुगुला
लेखाकार

एक छोटे से गाँव में सुमित नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत ही होशियार और मेहनती था, लेकिन उसके पास पढ़ाई के लिए अच्छे साधन नहीं थे। उसके पास एक पुरानी किताबें और एक टूटी हुई टेबल थी।

सुमित के सपने बड़े थे। वह डॉक्टर बनना चाहता था ताकि वह अपने गाँव के लोगों की मदद कर सके। हर दिन वह अपनी किताबें पढ़ता, रातों तक पढ़ाई करता, और कभी हार नहीं मानता। गाँव के लोग कहते थे, "इतना गरीब है, कैसे डॉक्टर बनेगा?" लेकिन सुमित की माँ हमेशा कहती, "बेटा, अगर मन में सच्चा जूनून हो तो रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं।"

समय बीता, सुमित ने कड़ी मेहनत की, और आखिरकार उसने बड़ी शहर की मेडिकल कॉलेज में दाखिला पा लिया। वहाँ उसने दिन-रात मेहनत से पढ़ाई की और अपनी काबिलियत साबित की। कुछ साल बाद, डॉक्टर सुमित गाँव वापस लौटा। उसने अपने गाँव में एक छोटी क्लिनिक खोली और हर किसी की मदद करने लगा। सपनों को सच करने के लिए केवल सपने देखने ही नहीं, मेहनत और विश्वास भी ज़रूरी होता है। सुमित की कहानी यह सिखाती है कि कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी बड़ी हों, अगर दिल में हिम्मत हो तो हर मंज़िल आसान हो जाती है। डॉक्टर सुमित की क्लिनिक धीरे-धीरे गाँव में बहुत लोकप्रिय हो गई। लोग दूर-दूर से इलाज के लिए आने लगे। सुमित ने सिर्फ बीमारी का इलाज नहीं किया, बल्कि लोगों को स्वच्छता, पौष्टिक आहार और स्वास्थ्य के बारे में भी जागरूक किया।

एक दिन गाँव में बड़ी बीमारी फैल गई। कई लोग बीमार हो गए। गाँव के लोग डर के मारे घबराए हुए थे। सुमित ने बिना देर किए अपनी पूरी टीम के साथ मिलकर इलाज शुरू किया। उसने गाँव वालों को साफ-सफाई का ध्यान रखने के लिए प्रेरित किया और अस्पताल में नि:शुल्क दवाइयां बांटी। सुमित की लगन और सेवा देखकर गाँव के लोगों का विश्वास और बढ़ गया। बच्चे और बूढ़े सब उसकी बात मानने लगे। कुछ महीनों में बीमारी पर काबू पा लिया गया।

इस अनुभव से सुमित ने सोचा कि गाँव में एक बड़ा अस्पताल होना चाहिए ताकि और बेहतर सेवा दी जा सके। उसने शहर के लोगों और सरकार से मदद मांगी। उसकी सच्चाई और मेहनत देखकर कई लोगों ने उसकी मदद की और गाँव में एक आधुनिक अस्पताल बन गया। अब सुमित न सिर्फ डॉक्टर था, बल्कि गाँव का हीरो भी बन चुका था। उसके सपनों की उड़ान ने पूरे गाँव को एक नई जिंदगी दी।

नए अस्पताल के बनने के बाद, गाँव के लोगों का जीवन पूरी तरह बदल गया। अब बीमारियों से डरना नहीं पड़ता था, और लोग समय पर इलाज पा रहे थे। सुमित ने यह भी सुनिश्चित किया कि अस्पताल में सभी के लिए मुफ्त या किफायती इलाज हो। लेकिन सुमित के मन में एक और बड़ा सपना था — गाँव के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे भी बड़े सपने देख सकें। उसने गाँव में एक स्कूल खोलने का निश्चय किया। शुरुआत में गाँव के कुछ लोग इसका विरोध करते थे। वे कहते थे, "स्कूल खोलने से क्या फायदा, बच्चे तो खेती-बाड़ी करेंगे।"

लेकिन सुमित ने हार नहीं मानी। उसने अपने दोस्तों और दानदाताओं की मदद से स्कूल की व्यवस्था की, अच्छे शिक्षक बनाए, और बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे बच्चे स्कूल आने लगे, और उनकी पढ़ाई में रुचि बढ़ी। गाँव के बच्चे अब डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक बनने के सपने देखने लगे। सुमित ने साबित कर दिया कि अगर मन में जुनून और सेवा की भावना हो तो किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।

विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश में प्रकृति की सुंदरता

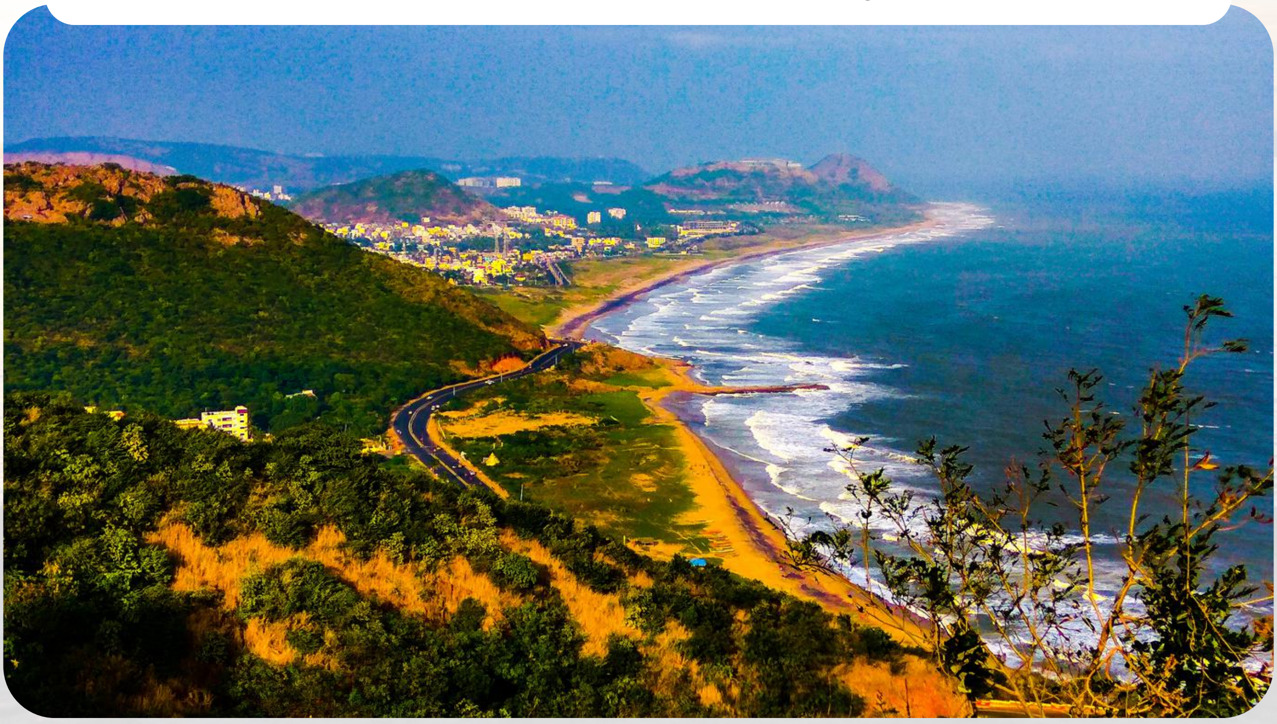

(कहानी)

भटकती यादें

समीर सरकार
लेखाकार

एक बार की बात है, एक रईस परिवार का लड़का, जिसका नाम अमन था। अमन के पास कोई रोजगार नहीं था, लेकिन वह अपने दम पर कुछ हासिल करना चाहता था। उसने कड़ी मेहनत की और एक बड़ी कंपनी में अच्छी नौकरी प्राप्त की। वह बेहद लगन से काम करता था और सबका दिल अपने काम से जीत लेता था।

समय बीतता गया और अमन ने अपनी मेहनत से एक कंपनी भी शुरू कर दी। इस दौरान उसके परिवार वालों ने उसकी शादी करवाने की सोची और एक पढ़ी-लिखी लड़की, जिसका नाम सुजाता था, से उसकी शादी करवा दी। सुजाता को भी अपने पति की कंपनी में काम करने का बहुत मन था। लेकिन कंपनी दूसरे शहर में था। इसलिए सुजाता को ससुराल छोड़कर अमन के साथ दूसरे शहर जाना पड़ा।

अब ऐसा था कि सुजाता काफी पढ़ी-लिखी थी और उसे खाना बनाना, घर का काम नहीं आता था। अमन और उसके परिवार वाले यह जान रहे थे इसीलिए अमन ने समझदारी से उसे कंपनी के काम में मन लगाने को कहा और घर पर हाउसकीपिंग स्टाफ रख दिया।

दिन बीतते गए, और वे दोनों खुशहाल जिंदगी बिता रहे थे। उनकी कंपनी भी खूब तरक्की कर रही थी। दोनों हमेशा व्यस्त रहते थे।

लेकिन अब परिवार वालों ने उन्हें संतान के बारे में का सोचने को कहा। उन्हें लगा बात सही है और दोनों ने भविष्य की योजना बनाने की सोची। कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि वे दोनों माता-पिता बनने वाले हैं और साथ में यह भी कि उनके कंपनी को काफी ऑर्डर और टेंडर मिले हैं। वे बहुत खुश थे, लेकिन सुजाता प्रेग्नेंसी के दौरान भी काफी समय तक लैपटॉप और मोबाइल का इस्तेमाल करती रही क्योंकि उनका काम ऐसा था। शारीरिक व्यायाम बहुत कम था और खाने की आदतें व समय भी बिगड़ गए थे।

समय बीत गया और जल्दी ही सुजाता ने एक प्यारे से बेटे को जन्म दिया। सब बहुत खुश थे। बच्चे का नामकरण समारोह हुआ और उसका नाम अंकुश रखा गया। वह बड़ा ही प्यारा बच्चा था। कुछ महीनों तक सब साथ रहे और बच्चा भी स्वस्थ विकसित हो रहा था। लेकिन अब काम में भी ध्यान देना था। तो सुजाता ऑफिस जाने लगी। बच्चे का ज्यादा ध्यान हाउसकीपिंग स्टाफ ही रखा करता था।

घर वापस आते-आते सुजाता और अमन को रात हो जाती थी, अंकुश मम्मी-पापा के बिना सो जाता था। उन्हें यह बुरा लगता था। उन्होंने सोचा क्यूं ना उसके मनोरंजन के लिए घर के टीवी पर अच्छे अच्छे कार्टून्स और कहानियाँ डाल देते ताकि वह खूब एन्जॉय करे। काम में व्यस्त होने के कारण, वे हमेशा बच्चे को अपने से दूर और किसी न किसी गेजट के साथ खेलने देते थे। ऐसे करते-करते समय बीतता गया।

हाउसकीपिंग स्टाफ था तो बच्चा बोलना सीख गया था और अब तो उसकी स्कूलिंग भी शुरू हो गई थी। कभी-कभी अगर उसे कुछ पूछना होता या पढ़ाई में कोई संदेह होती तो अंकुश अपने माता पिता से पूछता, लेकिन माता पिता "रुको, अभी नहीं" कहकर टाल देते। इस तरह वह पढ़ाई में भी कमजोर हो गया।

पेरेंट्स मीटिंग में टिचर्स ने कहा, तब पेरेंट्स ने सोचा ट्यूटर लगवा दें, लेकिन अमन चाहता था कि आजकल डिजिटल और ऑनलाइन मोड पर सब हो जाता है, इसलिए ट्यूटर लगाने के बजाय वे अंकुश को एक टैबलेट खरीद देते हैं, जिससे वह खुद पढ़ाई कर ले।

इस तरह उन्होंने अंकुश को टैबलेट खरीद दिया और समझाया कि देखो बेटा, कई तरह के ऐप हैं, तुम अपने सवाल पूछो, ये सब जवाब देंगे। ऐसे करने में अंकुश को बहुत मज़ा आने लगा, मानो उसे कोई नया दोस्त मिल गया हो। दिनभर वह अपनी टैब से बातें और सवाल करता रहता।

समय बीतता गया, अगले पेरेंट मीट पर जब सुजाता टीचर से मिली, तो टीचर ने एक अजीब सी बात बताई कि अंकुश पहले टीचर्स की इज्जत करता था और काफी जिज्ञासु रहता था, अब मानो उसे कुछ पूछना नहीं होता, बस कहता कि मैं घर जाऊंगा तब पढ़ लूंगा। और उसका रिजल्ट भी काफी खराब था।

सुजाता ने अंकुश से बात करने का सोचा, पर काम के कारण वह भूल गई और बात को इग्नोर कर दिया। अब तो ऐसा था मानो अंकुश अपनी एक अलग ही दुनिया बना चुका था, जैसे वह और टैब पर बोलने वाला उसका साथी बस। जब देखो अजीब-अजीब सी बातें करता और किसी तरह के भी सवाल पूछता।

एक दिन अमन की तबियत ठीक नहीं थी, वह घर पर था और अंकुश की भी छुट्टी थी। अमन ने अंकुश को बुलाया और कहा, "बेटा, मुझे एक गिलास पानी देना, सिरदर्द हो रहा है।" अंकुश ना जाने क्या बड़बड़ाया और कुछ समय बाद वह पानी लेकर आया। उसने उस पानी को पीते ही अमन की तबियत बिगड़ने लगी। उन्हें तुरंत एडमिट होना पड़ा। डॉक्टर ने बताया कि किसी तरह का केमिकल रिएक्शन था जो बहुत खतरनाक था। कोई दवा थी जो काफी ओवर डोज की थी। तब अमन ने कहा, "मैंने कोई दवा नहीं ली," अचानक उन्हें याद आया कि अंकुश ने उन्हें पानी दिया था उसके बाद ही...

घर जब वापस आए अंकुश से बात करने का सोचा, अंकुश को काफी देर तक पुकारा पर वह ना जाने कहां खोया हुआ था। जब वे उसके कमरे में गए, उन्होंने देखा अंकुश का कमरा बिखरा हुआ था और वह पागलों की तरह कर रहा था। क्योंकि उसका टैब का चार्जिंग खत्म हो गया था और चार्जर नहीं मिल रहा था।

अमन को बात अजीब लगी। उसने सुजाता से बात की, इसी दौरान स्कूल के प्रिंसिपल का कॉल आया। वे स्कूल गए, पता चला अंकुश नियमित स्कूल नहीं आता, अगर आता भी है तो क्लास में सो जाता है। प्रिंसिपल ने उन्हें मनोवैज्ञानिक से कंसल्ट करने को कहा।

अमन और सुजाता परेशान हो गए और सोचा यह तो काफी बड़ी समस्या हो गई। इतना छोटा सा बच्चा ऐसा कैसे कर सकता है। वे बच्चे को कंसल्टेंट के पास ले जा रहे थे, रास्ते भर वह कुछ बड़बड़ाता रहा, अपने आप से, न ही पेरेंट्स से बातें कर रहा था और न कोई जवाब दे रहा था, मानो वह कैसे पागल हो गया हो। सुजाता रोने लगी, अमन ने कहा, "धैर्य रखो।"

कंसल्टिंग कराने के बाद उन्हें पता चला कि बच्चा पूरी तरह से टैब का आदी हो चुका है। उसे केवल टैबलेट और इंटरनेट की बातें पसंद हैं। डॉक्टर ने कहा, "पेरेंट्स की एक गलती की वजह से आज उनका सामान्य बच्चा अपनी सोच खो चुका है और पूरी तरह से इंटरनेट के सवाल और जवाब में अपना संसार बसा चुका है।" इससे पहले बच्चा पूरा बीमार हो जाए, उन्हें उसका समय उसके साथ खेल-कूद और बाहरी दुनिया देखने का देना होगा। समय लगेगा पर ठीक हो सकता है...

सुजाता और अमन को यह बात सुनकर ऐसा लगा कि वे पढ़े-लिखे, कमाने के कारण इतने बुरे पेरेंट्स कैसे बन गए। इतनी सी समझदारी उनमें नहीं आई कि बच्चे के विकास में समस्या आ सकती है। इस तरह उन्हें गलती का एहसास हुआ पर अपने बच्चे को इतनी बुरी जिंदगी उन्होंने उपहार दे दी।
अंत में, समय महत्वपूर्ण है, कब, कितना और कैसे देना है, इतना समझदार होना जरूरी है।

चित्रांकन प्रतियोगिता 2025 के विजेता

सारथी मिरियाला
(प्रथम पुरस्कार)

मेकला आराम ज्योति
(द्वितीय पुरस्कार)

समीर सरकार
(तृतीय पुरस्कार)

योग का इतिहास

अंकिता कोइरी
कनिष्ठ अनुवादक

योग शब्द का पहली बार प्रयोग ऋग्वेद नामक एक पवित्र ग्रंथ में 1500-1000 ईसा पूर्व के काल में हुआ था। इसका अर्थ है "मिलन"। दुनिया भर में प्रचलित एक आध्यात्मिक अनुशासन के रूप में, योग का उद्देश्य शरीर, मन और भावनाओं के बीच एकता स्थापित करना है। इसके अभ्यास शरीर की गतिविधियों, श्वास क्रिया, चिंतन और इंद्रियों के निष्कासन का एक सुंदर संयोजन हैं।

यद्यपि इसकी सटीक उत्पत्ति अज्ञात है, योग का एक समृद्ध इतिहास है जिसका पता हज़ारों वर्षों पहले लगाया जा सकता है। योग के इतिहास को आमतौर पर चार अवधियों में विभाजित किया जाता है, जिनमें इसकी उत्पत्ति, विकास, अभ्यास और उन्नति शामिल हैं।

मुख्य रूप से ब्राह्मणों या वैदिक पुरोहितों द्वारा प्रयुक्त, वेद पवित्र ग्रंथों का एक संग्रह है जिसमें गीत, मंत्र और अनुष्ठान शामिल हैं। और जैसा कि हमने पहले बताया, "योग" शब्द सबसे पहले ऋग्वेद में आया था—जो सभी वेदों में सबसे प्राचीन है।

समय के साथ, ब्राह्मणों और ऋषियों (रहस्यवादी द्रष्टाओं) ने योगाभ्यास को परिष्कृत और विकसित किया, जिसका पूरा विवरण उपनिषदों में मिलता है। उपनिषदों में न केवल हिंदू धर्म की कुछ प्रारंभिक अवधारणाएँ समाहित हैं, बल्कि वे यह भी मानते हैं कि आत्मज्ञान प्राप्त करने का सर्वोत्तम तरीका किसी गुरु के अधीन अध्ययन करना और अपना जीवन योगाभ्यास के लिए समर्पित करना है।

कर्म योग - दूसरों की सेवा के लिए निस्वार्थ समर्पण

ज्ञान योग - आध्यात्मिक लेखन का अध्ययन

योग और भगवद गीता उपनिषद ग्रंथों का सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अंश भगवद् गीता (लगभग 500 ईसा पूर्व रचित) है। हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथों में से एक मानी जाने वाली भगवद् गीता पौराणिक कथाओं की एक श्रृंखला है, जो सभी भारतीय महाकाव्य महाभारत में शामिल हैं ।

भगवद्गीता में भक्ति की तीन विधियाँ बताई गई हैं:

कर्म योग

ज्ञान योग

भक्ति योग

लगभग 400 ईसा पूर्व, प्रसिद्ध ऋषि और रहस्यवादी पतंजलि ने योग-सूत्रों की शुरुआत के साथ योग के शास्त्रीय काल का सूत्रपात किया। योग के अष्टांगिक मार्ग के प्रवर्तन के साथ, पतंजलि ने अंततः योगाभ्यास को कुछ व्यवस्थित रूप दिया। पहली बार, समाधि या ज्ञानोदय प्राप्त करने के लिए आवश्यक चरणों और अवस्थाओं की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

योग के आठ अंग हैं:

- यम - आत्म-संयम
- नियम - आत्म-शुद्धि
- आसन - आसन या मुद्रा
- प्राणायाम - श्वास नियंत्रण
- प्रत्याहार - इन्द्रिय प्रत्याहार
- धारणा - एक बिंदु पर एकाग्रता
- ध्यान - ध्यान
- समाधि - पूर्ण तल्लीनता

कई लोग पतंजलि को योग का जनक मानते हैं और उनके योग-सूत्रों का आधुनिक योग पर गहरा प्रभाव माना जाता है। टी. कृष्णमाचार्य और स्वामी शिवानंद सरस्वती द्वारा भारत मेंयोग के प्रचार-प्रसार के साथ योग की लोकप्रियता बढ़ती गई। पश्चिम में योग को लोकप्रियता 20वीं सदी के आरंभ में ही मिली जब योग गुरुओं ने इसकी शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए भारत से बाहर यात्राएँ शुरू कीं।

योग को सबसे पहले अमेरिका में स्वामी विवेकानंद लेकर आए , जिन्होंने 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में भाषण दिया था। 1947 में, इंद्रा देवी ने पश्चिमी हॉलीवुड में अपना पहला योग स्टूडियो खोलकर इस दिशा में कदम बढ़ाया। उनके प्रसिद्ध शिष्यों की सूची में अभिनेत्रियाँ ग्रेटा गार्बो, ग्लोरिया स्वानसन और सौंदर्य की दुनिया की जानी-मानी हस्ती एलिजाबेथ आर्डेन शामिल थीं। 1969 में, स्वामी सच्चिदानंद ने वुडस्टॉक में एक प्रसिद्ध उद्घाटन भाषण दिया, जहाँ उन्होंने शांति और प्रेम के बारे में प्रार्थना की। बाद में वे वुडस्टॉक गुरु के नाम से प्रसिद्ध हुए।

सच्चिदानंद अमेरिका आने वाले पहले स्वामी नहीं थे, लेकिन वुडस्टॉक में उनका आगमन योग के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यहीं पर पूरब और पश्चिम का मिलन हुआ और योग ने अमेरिका में अपनी जड़ें मज़बूती से जमानी शुरू कीं। अनेक स्वामियों के अलावा, टी. कृष्णमाचार्य के तीन छात्रों ने उनकी विरासत को आगे बढ़ाया और उनकी शिक्षाओं को दुनिया के साथ साझा किया।

बी.के.एस. अयंगर ने योगासनों का अपना क्रम बनाकर इस अभ्यास को विकसित करना जारी रखा।

इंद्रा देवी - पहली प्रसिद्ध योगिनी या महिला योग गुरु थीं

टी.के.वी. देसिकाचार (टी. कृष्णमाचार्य के पुत्र) ने विनयोग का विकास किया, जो अष्टांग योग की तुलना में योग का कम तीव्र तथा अधिक उपचारात्मक रूप था।

वर्षों से, योग का इतिहास निरंतर विकसित होता रहा है। आज, योग शैलियों की अनगिनत विविधताएँ मौजूद हैं, जिनमें बिक्रम योग, कुंडलिनी योग, पावर योग और अनगिनत अन्य शामिल हैं। टीकेवी देसिकाचार द्वारा अक्सर कही गई एक बात पर ध्यान ज़रूरी है—योग कोई एक ही प्रकार का अभ्यास नहीं है जो सभी के लिए उपयुक्त हो; हर किसी के लिए योग की एक सही शैली होती है।

सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप ?

स्मृति कुमारी
पत्नी श्री संदीप कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

सोशल मीडिया (Social Media) इंटरनेट पर आधारित प्लेटफ़ॉर्म होते हैं, जिनके माध्यम से लोग आपस में संवाद कर सकते हैं, विचार और जानकारियाँ साझा कर सकते हैं, फोटो, वीडियो, लेख आदि पोस्ट कर सकते हैं, और दूसरों की पोस्ट पर प्रतिक्रिया भी दे सकते हैं। उदाहरण: फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप, ट्विटर आदि। यह आधुनिक डिजिटल युग का एक प्रभावशाली साधन है, जो न सिर्फ़ व्यक्तिगत बातचीत के लिए, बल्कि व्यवसाय, शिक्षा, प्रचार-प्रसार और मनोरंजन के लिए भी उपयोग किया जाता है।

वर्तमान युग तकनीक का युग है और सोशल मीडिया इसका एक प्रमुख अंग बन चुका है। सोशल मीडिया का व्यापक प्रसार आज के युग में एक क्रांति की तरह है । फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर (एक्स), व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स ने न केवल हमारे संचार के तरीके को बदला है, बल्कि समाज, संस्कृति और मानसिकता पर भी गहरा प्रभाव डाला है। यह कहना गलत नहीं होगा कि सोशल मीडिया आज के समय में एक दोधारी तलवार बन चुका है – जो एक ओर वरदान है, तो दूसरी ओर एक अभिशाप भी।

सोशल मीडिया एक वरदान के रूप में:

1. सूचना का त्वरित आदान-प्रदान

सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने की खबर कुछ ही सेकंड में हम तक पहुँच जाती है। समाचारों की पहुँच और जागरूकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है।

2. सृजनात्मकता को मंच

कलाकार, लेखक, गायक, चित्रकार आदि को अपने हुनर को दिखाने का एक सशक्त माध्यम मिला है। बिना किसी बड़े मंच के भी लोग प्रसिद्धि पा रहे हैं।

3. व्यवसाय और प्रचार के नए रास्ते

छोटे व्यापारी हों या बड़ी कंपनियाँ, सोशल मीडिया के ज़रिए अपने उत्पादों और सेवाओं को बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचा रहे हैं।

4. शिक्षा और जागरूकता का साधन

अनेक शैक्षणिक चैनल, कोर्स और जानकारियाँ अब मुफ्त में उपलब्ध हैं। छात्रों के लिए यह एक सशक्त ज्ञान का स्रोत बन चुका है।

सोशल मीडिया एक अभिशाप के रूप में:

1. नकली खबरों और अफवाहों का प्रसार

बिना सत्यापन के फैलाई गई झूठी खबरें समाज में भ्रम और हिंसा तक फैला देती हैं।

2. गोपनीयता का हनन

व्यक्तिगत जानकारियाँ अक्सर असुरक्षित रहती हैं, जिससे साइबर क्राइम और ब्लैकमेलिंग जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

3. मानसिक तनाव और आत्मविश्वास में कमी

लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़ ने युवा वर्ग में हीन भावना और अवसाद (डिप्रेशन) को जन्म दिया है।

4. नशे की तरह लत

बच्चों, किशोरों और यहां तक कि वयस्कों में सोशल मीडिया की लत उनकी पढ़ाई, कामकाज और पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर रही है।

निष्कर्ष:

सोशल मीडिया न तो पूर्णत: वरदान है और न ही पूर्णत: अभिशाप। है।सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है, इसलिए सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार ने कई प्रभावी कदम उठाए हैं, जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 के तहत सोशल मीडिया कंपनियों को शिकायत निवारण अधिकारी नियुक्त करना, फेक न्यूज़ हटाने और पहले प्रवर्तक की पहचान करना अनिवार्य किया गया है। सरकार ने PIB Fact Check सेवा शुरू की है और साइबर क्राइम के लिए ऑनलाइन पोर्टल (cybercrime.gov.in) भी उपलब्ध कराया है। साथ ही, जागरूकता अभियान, साइबर पुलिस सेल और कड़े कानूनी प्रावधानों के माध्यम से गलत कंटेंट पर कार्रवाई की जाती है। सोशल मीडिया कंपनियों से सहयोग लेकर भारत सरकार डिजिटल सुरक्षा को और मजबूत बना रही है।

इन सब के अलवे हम नागरिकों की भागीदारी और सतर्कता के बिना यह प्रयास अधूरे हैं। यदि विवेकपूर्ण ढंग से इसका उपयोग किया जाए, तो यह हमारे जीवन को बेहतर बना सकता है, अन्यथा यह हमें सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से कमजोर भी बना सकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम सोशल मीडिया के उपयोग में संतुलन बनाए रखें और इसे अपने जीवन को संवारने का साधन बनाएं, न कि बिगाड़ने का।

सरकारी कार्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग

अनूप चौहान
आशुलिपिक

सरकारी कार्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है और यह सरकारी सेवाओं को अधिक प्रभावी, तेज और पारदर्शी बनाने में मदद कर रहा है। AI तकनीक का इस्तेमाल नीति निर्माण, डेटा विश्लेषण, सार्वजनिक सेवा वितरण, और कानून प्रवर्तन जैसे क्षेत्रों में किया जा रहा है। AI आधारित स्वचालन से प्रशासनिक प्रक्रियाएं सरल होती हैं और निर्णय लेने में सहायता मिलती है। भारत सरकार की विभिन्न पहलें जैसे "India AI Mission" और "भाषिनी परियोजना" बहुभाषी संचार और निर्णय लेने के क्षेत्र में AI के महत्व को बढ़ा रही हैं। AI-संचालित चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट नागरिकों की शिकायत निवारण प्रक्रिया को आसान बनाते हैं। सुरक्षा क्षेत्र में AI आधारित फेशियल रिकग्निशन और साइबर सुरक्षा तकनीकें कानून प्रवर्तन को सशक्त कर रही हैं। इसके साथ ही AI स्वास्थ्य सेवा, महामारी प्रबंधन, और संसाधन आवंटन जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है।

AI के कई फायदे हैं, जिनमें प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि, बेहतर निर्णय लेने में सहायता, सेवा वितरण में सुधार, सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना, और भाषाई विविधता में सुधार करना शामिल हैं। स्वचालन से सरकारी काम तेजी से और कम त्रुटियों के साथ होते हैं, जिससे जनता को बेहतर सेवाएं मिलती हैं। बड़े डेटा का वैज्ञानिक विश्लेषण नीति निर्माण को सशक्त बनाता है, वहीं AI चैटबॉट्स 24 घंटे सेवा प्रदान कर नागरिकों को सुविधा देते हैं। इसके अलावा, अपराध पहचान, फेशियल रिकग्निशन, और साइबर सुरक्षा क्षेत्रों में AI की भूमिका महत्वपूर्ण है। बहुभाषी AI प्लेटफॉर्म सरकारी नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

हालांकि, AI के उपयोग से कुछ नुकसान और चुनौतियां भी सामने आती हैं। स्वचालन के कारण कम कौशल वाले कर्मचारियों के लिए नौकरी की संभावनाएं जोखिम में आ सकती हैं। संवेदनशील सरकारी डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। AI पर अत्यधिक निर्भरता मानव विवेक और निर्णय क्षमता को प्रभावित कर सकती है। साथ ही, तकनीकी जटिलताओं और उच्च लागत के कारण इसे लागू करना महंगा पड़ सकता है। इसके अलावा, AI के पारदर्शी और जिम्मेदार उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु कड़े नियमों और नीतियों की जरूरत होती है।

अंततः, सरकारी कार्यालयों में AI तकनीक का सही और संतुलित उपयोग सरकार की सेवाओं को बेहतर बनाने का अवसर देता है। इसके प्रभावों को ध्यान में रखते हुए निरंतर कौशल विकास, डेटा सुरक्षा, और नैतिक नियमों का पालन आवश्यक है। यदि AI को सावधानी और मानवीय दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए तो यह सरकार को अधिक जवाबदेह, समावेशी, और प्रभावी बना सकता है।

सोशल मीडिया

धर्मेन्द्र शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

सोशल मीडिया सामाजिक बाधाओं को कम कर रहा है। यह लोगों को पहचान के आधार पर नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के आधार पर जोड़ता है।

— नरेंद्र मोदी

वर्तमान समय सोशल मीडिया का समय है और आज का युग इंटरनेट का युग है। देश-विदेश में निरंतर हो रही तकनीकी उन्नति द्वारा ही सोशल मीडिया ने अपना दबदबा बना लिया है। आइए, सबसे पहले हम सोशल मीडिया का अर्थ समझ लेते हैं।

सोशल मीडिया एक सामाजिक मेल-मिलाप तथा दूरसंचार का साधन है तथा यह एक प्रकार का मायाजाल है जो इंटरनेट के माध्यम से चलता है। सोशल मीडिया का सीधा संबंध इंटरनेट से है। सोशल मीडिया केवल एक नहीं वरन् बहुत से माध्यमों का समूह है। सोशल मीडिया कई रूपों में हमारे समक्ष उपलब्ध है।

सोशल मीडिया के विभिन्न प्रकार हैं। फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि सोशल मीडिया के इन माध्यमों का मूल उद्देश्य दूर के लोगों को आपस में जोड़ना था, परंतु यह माध्यम अपने मूल उद्देश्यों से भटक रहे हैं क्योंकि सोशल मीडिया का बुखार हमारी युवा पीढ़ी पर इस प्रकार चढ़ा है कि उन्हें अपनी हर बात तुरंत इन माध्यमों के द्वारा दूसरों तक पहुंचानी होती है।

सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानकारी के कारण ही आज साइबर क्राइम हो रहे हैं। सोशल मीडिया द्वारा कोई भी किसी की भी जानकारी का दुरुपयोग करके हानि पहुंचा सकता है। सोशल मीडिया को सुरक्षित या इंक्रिप्टेड बताया जाता है परंतु ऐसा वास्तव में नहीं है। सोशल मीडिया एक खुली किताब है जहां किसी व्यक्ति की गोपनीयता या निजता सुरक्षित हो।

उपर्युक्त बातें तो जनसाधारण के संदर्भ में उचित हैं ही इसके साथ-साथ देश की सरकार की निजता का भी उल्लंघन होता है। इन माध्यमों द्वारा सरकारीगतिविधियां, गुप्त जानकारी, दस्तावेजों, कार्यक्रमों व हथियार संबंधी जानकारी का भी दुरुपयोग किया जा सकता है इसलिए ही रक्षा विभाग के कई दफ्तरों, सरकारी सम्मेलनों व संसद भवन इत्यादि में स्मार्टफोन ले जाना प्रतिबंधित है। कई सरकारी कार्यालय में सुरक्षा की पुख्ता जांच भी की जाती है ताकि कोई विशेष गतिविधि या सूचना किसी हानिकारक समूह को पता ना चले।

सोशल मीडिया पर फोटो खींचकर डालना बहुत ही आसान है जबकि इसके भुगतान उतने ही भयावह हो सकते हैं। सारी जानकारी सर्वत्र उपलब्ध कराना उचित नहीं। आजकल लड़के-लड़कियां सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि पर अपनी फोटो व आने जाने की जानकारी डाल देते हैं जिसके परिणामस्वरूप वे अनजाने ही आपराधिक गतिविधियों का शिकार हो जाते हैं। कई बार उन्हें ब्लैकमेल किया जाता है या धमकी दी जाती है और कभी कभी तो किसी जानकारी के बदले उनसे मोटी रकम भी वसूल ली जाती है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की दर (प्रति 100,000 महिला आबादी पर अपराधों के रूप में गणना की गई) 2018 और 2022 के बीच 12.9% बढ़ी है। भारत में, प्रति 100,000 महिला आबादी पर महिलाओं के खिलाफ दर्ज अपराध 2022 में 66.4 हैं, जबकि 2018 में यह 58.8 था। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि महिलाओं के साथ अपराधों की दर में वृद्धि हुई है जिसका एक मुख्य कारण सोशल मीडिया है।

यह कहना गलत न होगा कि सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार है। हालाँकि यह जुड़ाव, सीखने और सक्रियता के बेजोड़ अवसर प्रदान करता है, लेकिन यह मानसिक स्वास्थ्य, निजता और गलत सूचना के प्रसार के लिए गंभीर जोखिम भी प्रस्तुत करता है। इसके संभावित नुकसानों को कम करते हुए इसके सकारात्मक पहलुओं का लाभ उठाने के लिए ज़िम्मेदार और संतुलित उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सोशल मीडिया की मनोवैज्ञानिक और समाज शास्त्रीय गतिशीलता के बारे में उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करने से इसकी स्वार्थी प्रवृत्तियों को कम करने में मदद मिल सकती है। आलोचनात्मक सोच, मीडिया साक्षरता और नैतिक ऑनलाइन व्यवहार पर ज़ोर देने वाले डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम व्यक्तियों को सोशल मीडिया का अधिक सोच-समझकर और ज़िम्मेदारी से उपयोग करने के लिए सशक्त बना सकते हैं। आत्म-धारणा और रिश्तों पर सोशल मीडिया के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाकर, उपयोगकर्ता अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के बारे में अधिक सोच-समझकर निर्णय ले सकते हैं।

सोशल मीडिया एक जटिल और बहुआयामी माध्यम है जो अपने उपयोगकर्ताओं के मूल्यों और व्यवहारों को प्रतिबिंबित और परिवर्धित करता है। जहाँ एक ओर यह अनेक लाभ प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर यह आत्म-प्रचार, मान्यता प्राप्ति और व्यक्तिवाद की संस्कृति को भी बढ़ावा देता है। सोशल मीडिया की स्वार्थी प्रकृति में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय और आर्थिक कारक इसके उपयोग के प्रति अधिक सचेत और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर करते हैं। डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर, उपयोगकर्ता-केंद्रित प्लेटफ़ॉर्म डिज़ाइन करके और समुदाय-उन्मुख पहलों को प्रोत्साहित करके, समाज सोशल मीडिया की सकारात्मक क्षमता का दोहन कर सकता है और साथ ही इसके अंतर्निहित स्वार्थ को भी कम कर सकता है। ऐसा करके, सोशल मीडिया एक ऐसे माध्यम के रूप में विकसित हो सकता है जो न केवल व्यक्तियों को जोड़ता है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी मज़बूत करता है और सामूहिक कल्याण को बढ़ावा देता है।

अतः यह युग इंटरनेट व सोशल मीडिया का तो है ही, लेकिन हैकिंग व ब्लैकमेलिंग का भी है। हमें हमारी निजता की सुरक्षा स्वयं ही करनी पड़ेगी वरना भुगतान भी हम ही करेंगे क्योंकि सोशल मीडिया मानवीय निजता का उल्लंघन है। इसके द्वारा हमारी निजता को क्षति पहुंचती है व भविष्य में अनेकों दुखों का कारण बनती है। निजता का ध्यान रखते हुए हमें बहुत सावधानी से सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए।

क्या हम वास्तव में इस डिजिटल युग में अपने बच्चों को कितना जानते हैं?

माधुरी टेल्कपल्ली
वरिष्ठ लेखाकार

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहां तकनीक, इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल कंटेंट हमारे चारों ओर है। बच्चे चाहे जानबूझकर या अनजाने में, रोजाना इन सब का हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे में एक अहम सवाल उठता है:

क्या हम सच में जानते हैं कि हमारे बच्चे क्या सोचते हैं, वे कैसा महसूस करते हैं, और किन परिस्थितियों में वे निर्णय लेते हैं?

हाल ही में, हैदराबाद के कूकटपल्ली साहस्र हत्या केस ने इस सवाल को भयानक रूप में सामने रखा।

कूकटपल्ली साहस्र केस - एक चौंकाने वाली घटना

मुख्य तथ्य:

- 18 अगस्त 2025 को, कूकटपल्ली के संगीत नगर कॉलोनी में, साहस्र नाम की 10-12 साल की लड़की घर पर अकेली थी जबकि उसके माता-पिता काम पर गए थे।
- एक 14 वर्षीय लड़का, जो पास ही रहता था और कक्षा 10 का छात्र था, उसके घर में घुसा था ताकि उसके भाई का क्रिकेट बैट चोरी कर सके।
- जब साहस्र ने उसे देखा और चिल्लाना शुरू किया, तो वह लड़का घबरा गया और चाकू से उसे कई जगहों पर कई बार चोंट पहुंचाई।
- पुलिस ने उस लड़के की डायरी में एक विस्तृत योजना पाई — जिसमें गैस पाइप काटना, आग लगाना, चोरी करना आदि शामिल था।
- जांच में पता चला कि आरोपी पर ओटीटी क्राइम थ्रिलर और वेब सीरीज का गहरा प्रभाव था।

क्या यह सिर्फ एक भयानक खबर है — या इसके पीछे कोई गहरी सीख भी है?

यह घटना सिर्फ एक अपराध नहीं है — यह प्रणालीगत विफलता, पालन-पोषण में लापरवाही, और डिजिटल मीडिया के खतरनाक प्रभाव का एक कड़ा प्रतिबिंब है।

1. ऑनलाइन कंटेंट का प्रभाव

बच्चे जो कुछ भी ऑनलाइन देखते हैं — वेब सीरीज, गेम्स, यूट्यूब, सोशल मीडिया — वे उनके सोचने और नैतिक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं।

इस मामले में, लड़का अपराध और हिंसा आधारित कंटेंट से बहुत प्रभावित था।

2. संवाद की कमी

जब बच्चे बोलने से डरते हैं या उन्हें लगता है कि कोई उनकी बात नहीं सुनेगा, तो वे अपनी भावनाओं को दबाने लगते हैं। ये भावनाएं बिना सही मार्गदर्शन के कभी-कभी हिंसक रूप ले सकती हैं।

3. निगरानी और मार्गदर्शन की जरूरत

सिर्फ स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण रखना पर्याप्त नहीं है — हमें यह समझना होगा कि वे क्या सोच रहे हैं, वे किन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, और क्या वे सुरक्षित और भावनात्मक रूप से संतुलित महसूस करते हैं।

4. नैतिक शिक्षा और भावनात्मक समझ

किसी बच्चे से सिर्फ यह कहना कि "चोरी गलत है" पर्याप्त नहीं है। हमें उन्हें यह भी सिखाना होगा कि सहानुभूति, दूसरों के दर्द को समझना, और भावनात्मक जिम्मेदारी क्यों जरूरी है।

5. परिवार और समाज की भूमिका

यह सिर्फ माता-पिता की जिम्मेदारी नहीं है — स्कूल, समाज और सरकार को भी ऐसा माहौल बनाना चाहिए जहां बच्चे बिना डर के अपने मुद्दे खुलकर साझा कर सकें।

क्या किया जा सकता है?

- सिर्फ शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी मौजूद रहें।
- नियम बनाएं — लेकिन उनका कारण समझाएं।
- उनके साथ डिजिटल कंटेंट देखें — उनके दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करें, बिना जज किए।
- रोजाना 5-10 मिनट की "दिल की बात" करें — पूछें: "आज तुम कैसा महसूस कर रहे हो?"
- मानसिक स्वास्थ्य को बातचीत का नियमित हिस्सा बनाएं — ताकि यदि कुछ परेशान करे तो वे खुलकर बात कर सकें।

सारांश

डिजिटल युग हमें प्रगति के साथ नए चुनौतियां भी लाता है। यदि हम सतर्क नहीं रहे, तो हमारे बच्चे भ्रम, भय या हिंसा की ओर जा सकते हैं — और हमें पता भी नहीं चलेगा। कूकटपल्ली घटना जिम्मेदारी की एक पुकार है:

यहाँ तकनीक दुश्मन नहीं है, बल्कि बच्चों को पहले आत्म-नियंत्रण, सुरक्षा और आत्म-मूल्य सीखना होगा, इससे पहले कि वे किसी ऐसी चीज़ को पकड़ें जो उन्हें अंदर से तोड़ सकती है।

एक ऐसा बच्चा जो असली अनुभवों, भावनात्मक जुड़ाव, दिल से दिल की बातों, और स्क्रीन से दूर समय के साथ बड़ा होता है, तकनीक को एक उपकरण की तरह इस्तेमाल करना सीखता है, न कि एक छिपने की जगह के रूप में।

हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी डिजिटल डिवाइस सिर्फ खिलौना नहीं है, बल्कि एक ऐसा दरवाजा है जो एक विशाल दुनिया खोलता है, जहां सब कुछ संभव है। इसलिए, हमें, माता-पिता/देखभाल करने वालों को तय करना होगा कि क्या हमारे बच्चे उसे समझदारी से उपयोग करने के लिए तैयार हैं।

अब समय आ गया है कि हम केवल उनके "डिजिटल फूटप्रिंट" को ट्रैक करना बंद करें — और उनके भावनात्मक और नैतिक सफर में उनके साथ चलना शुरू करें। हमें ऐसी पीढ़ी तैयार करनी है जो सिर्फ तकनीकी रूप से स्मार्ट न हो, बल्कि भावनात्मक रूप से संतुलित, सहानुभूतिपूर्ण और नैतिक रूप से मजबूत भी हो।

कृष्णा नदी : विजयवाड़ा के दिल की धड़कन

उदयकिरण नेयिला
लेखाकार

नीले अम्बर तले बहती है जीवन की मधुर धारा,
विजयवाड़ा का गर्व और शक्ति है कृष्णा नदी का न्यारा।

हर लहर गाती है गीत, हर बूँद सुनाती है कहानी,
यह धरती को सींचकर देती है जीवन को नई निशानी।

जब यह झुकती है कनक दुर्गा माँ के चरणों के समीप,
हर तरंग सुनाती है भक्ति और दिव्य शक्ति का दीप।

पुलों से जल चमकता है, दीप जगमगाते किनारे,
चाँदनी रातों में यह दमके, जैसे स्वप्न अपार प्यारे।

यह खेतों में समृद्धि लाती, जीवन को देती श्रृंगार,
कृष्णा की गोद से उभरता है हरियाली का संसार।

ओ कृष्णा! तेरी बाँहों में बसा है इतिहास का प्रतिबिंब,
विजयवाड़ा ने तुझसे पाया है प्रेम और अटूट संबंध।

एक रिश्ता ऐसा भी

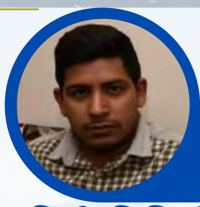

श्री अमित कौशिक
पति श्रीमति चित्रलेखा, वरिष्ठ अनुवादक

नन्हा सा था जब मैं उसे घर ले आया था,
बेजुबान था अनजान था फिर भी अपना बन गया था।
मेरे ही साथ बड़ा था मेरे ही साथ खेला था,
लड़ता था मुझसे पर फिर मेरे ही साथ खाता था।
हमसाया था मेरा मेरे साथ-साथ ही रहता था,
पहरेदार था मेरा मेरे आगे-आगे चलता था।
गलती पर पीटता था पर कोई आवाज़ न करता था,
बीमार हुआ जब भी मैं मेरे आस-पास ही रहता था।
घर से बाहर हो कोई तो सोता न था,
सबका ही तो वो फिक्रमंद था।
निर्मोही था अलविदा कह गया था,
पीछे बस यादें ही छोड़ गया था।
खिलौना था वो मेरा जाने किस दुनिया में चला गया,
जाते-जाते भी मेरी गोद में एक खिलौना दे मेरी दुनिया बसा गया।

सायोनारा.. सपनों में मिलेंगे.. ख्यालों में मिलेंगे..

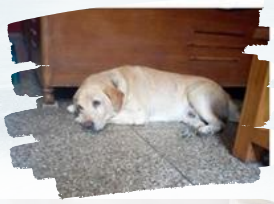

बंधन और उड़ान

के काव्या
लेखाकार

कभी वो चौखट से बंधी रही,
घर के आँगन में ही सिमटी रही।
सपने उसके आसमान को देखते थे,
पर पैर रस्मों की जंजीरों में लिपटे थे।

कहा गया—
"तेरी हँसी बस घर तक रहे,
तेरी राह बस आँगन तक।
लड़कियाँ उड़ान नहीं भरतीं,
वे बस रिश्तों को थामे रहती हैं।"
उसने ये सब सुना,
पर मन के भीतर एक छोटी सी लौ
हमेशा जलती रही।

फिर आया समय बदलाव का,
उसने किताबों को थामा,
कलम से अपनी आवाज़ लिखी।
कुछ स्त्रियाँ पंख फैलाकर निकलीं,
दुनिया की भीड़ में अपने कदम बढ़ाए।
उन्होंने साबित किया—
"हम सिर्फ सहनशीलता का प्रतीक नहीं,
हम मेहनत और सपनों का उजाला हैं।"

पर सच यही है—
उड़ान भरने वाली स्त्री भी
पूरी तरह आज़ाद नहीं है।
दफ़्तर से लौटकर
उसे रसोई में झांकना पड़ता है,
उससे त्योहारों के बहाने सवाल किए जाते हैं,
करियर और परिवार के बीच
हमेशा उसकी परीक्षा होती है।

और दूसरी ओर,
बहुसंख्य स्त्रियाँ आज भी
उन रस्मों में बंधी हैं
जहाँ शिक्षा सपना है,
जहाँ आवाज़ गुनाह है,
जहाँ उसकी दुनिया
सिर्फ चार दीवारों में सिमटी है।

ये दो तस्वीरें एक साथ चल रही हैं—
एक रंगीन, दूसरी धुंधली।
एक में उड़ान है,
दूसरी में बंधन की जंजीरें।
सवाल ये है—
क्या उड़ान तब पूरी होगी
जब हर स्त्री के पंख खुले होंगे?
क्या आज़ादी सिर्फ दरवाज़ा खोलने से आएगी,
या सोच की दीवारें भी गिरानी होंगी?

मैं चाहती हूँ एक ऐसा कल
जहाँ न कोई बंधन हो,
न कोई जंजीर,
जहाँ हर स्त्री अपने सपनों को जी सके,
और उसकी उड़ान
सिर्फ आसमान तक नहीं,
उससे भी आगे जाए।

नारी की शक्ति

संतोष कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

नारी है प्रकृति, नारी धरा,
उससे ही सजता जीवन सारा।
संकट आए, राहें कठिन,
नारी बनाए जग को नवीन।

ममता उसका साहस भी है,
उसके बिना जीवन अधूरा है।
वो है प्रेरणा, वो है ज्योति,
हर अंधियारे में देती रोशनी।

जंजीरे चाहे रोके राह,
नारी बढ़े तो मिलता प्रकाश।
वो है दीपक, राह दिखाए,
हर अंधियारा खुद ही मिटाए।

कभी दुर्गा, कभी लक्ष्मी कहलाए,
कभी सरस्वती रूप में आए।
ज्ञान, समृद्धि, बल की खान,
नारी है जग की पहचान।

कम मत आंकें उसकी शक्ति,
वो है जीवन की असली भक्ति।
वो जननी है, पालनहार,
उससे ही है सृजन का सार।

मेहनत उसके हाथों / हाथों की थाती ,
वो है निडर वह है साथी।
अवसर दें, सम्मान दिलाओ,
नारी को ऊँचाई तक पहुँचाओ।

नारी है ज्ञान, नारी है गीत,
उससे ही जीवन होता संगीतमय मीत ।
उसके सपनों को पंख लगाओ ,
उसकी राहे जगमगाओ ।

सशक्त नारी, सशक्त समाज,
उससे ही होगा हर कार्य सफल आज।
नारी को दो उसकी पहचान,
तभी बनेगा देश महान।

बेटा

मीनू सिंह
माता श्री अदित्य कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

बेटा, अब तुम बड़े हो गए,
श्रेष्ठतम ध्येय की प्राप्ति हेतु,
अब गृह त्यागी भी हो गए।
तुम्हारी सुन्दर भोली,
स्मृतियों को स्मरण कर ,
स्नेह और ममत्व का,
नित्य आलिंगन करती हूँ।
तुम मेरे प्यारे बच्चे हो,
जिसने सदा माँ का मान बढ़ाया ,
मेरे जीवन को धन्य बनाया।
जब भी स्मृति में तुम आते हो,
अश्रु स्वतः निः सर्त होते हैं।
तुम धीर, गम्भीर,
एंव ज्ञान पिपासु हो ।
लक्ष्य हेतु तुमने,
सुखों का त्याग किया ।
प्रतिज्ञा पर तुम्हारी ,
दृढ़ विश्वास मुझे है।
चुनौतियों को परस्त कर,
तुम सूर्य की भाँति चमकोगे ।
माँ आशीष दे रही,
तुम जीवन पथ पर,
विजयी होकर लौटोगे।।

व्यथा, एक बेटी की

मोहित
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

जन्म लिया बेटी ने जब,
ख़बर ये सिर्फ घर में ही रही,
और जन्म लिया बेटे ने जब,
ख़बर ये बढ़ी दूर तक गयी

चलना सिखा बेटी ने जब,
उसको छोटी एक गुड़िया खरीदी,
और चलना सिखा बेटे ने जब,
उसको छोटी एक साइकिल खरीदी

सिखा बोलना बेटी ने जब,
उसको कम बोलना सिखाया गया,
सिखा बोलना बेटे ने जब,
उसको स्कुल बैठाया गया

हुई बेटी थोड़ी समझदार जब,
उसको "रसोई" उपहार में दी,
और हुआ समझदार बेटा जब,
उसको दी उपहार में "आज़ादी"

अब क़सूर बताओ तुम समाज के लोगों,
कोई पाप किया है मैंने क्या ?
जो बढ़ा दिया बेटे को आगे,
बिन बेटी, वंश चला पाओगे क्या ?
बिन बेटी, वंश चला पाओगे क्या ?

परछाइयों से उजाले तक

सुशील कुमार प्रभात
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक विशाल से पेड़ की
बेजान डालियाँ झूमती हैं
जब हवा में,
तो साथ में उन पर बैठे कौवे
भी कैसे झूलते हैं।
देखा है कभी—
हौले-हौले।
उनकी काँव-काँव वैसी ही रहती है,
लेकिन उनकी आवाज़ में वो मधुरता
फिर भी नहीं आ पाती।

उन पेड़ के पत्तों की सिलवटों से जब
सूरज की किरणें आती हैं छुपकर,
तो सवेरा हो जाता है
और जाग जाना चाहता हूँ मैं।

ये पेड़ जो खड़ा है अभी,
जैसे इसे कोई हिला ही नहीं पाएगा,
और इसकी डालियाँ जो झूम रही हैं
इस मद्धम-मद्धम हवाओं से,

इन्हें मालूम भी है कि ये सब
धीरे-धीरे कैसे खो जाएँगे,
जब सूरज जाने लगेगा धरातल में।
इनकी परछाइयाँ ही तो रह जाएँगी।

और चाँद तो बेईमान है,
उस बहरूपिये का क्या भरोसा—
वो तो कम-ज़्यादा होकर,
कभी गायब हो ही जाएगा।

तब तो शायद ये पेड़ भी खो जाएगा,
चला जाएगा धरातल में।
सूरज के इंतज़ार में रात भर तड़पकर भी
खुद को ढूँढ नहीं पाएगा।

जब सूरज जागेगा हौले-हौले,
उसकी किरणें पड़ेंगी इस अल्हड़ पेड़ पर,
तब जाकर ये फिर से खड़ा हो जाएगा,
झूमेगा, इतराएगा अपने होने पर।

अपने खोने की बात को फिर से भूल जाएगा,
और डाल पर बैठी चिड़ियों को ऐसे झुलाएगा,
जैसे इसके बिना उनका कोई अस्तित्व ही नहीं।
पर चिड़ियों को तो सब पता है।

शाम में ही छोड़ जो दिया था उनका दामन,
झुंड में उड़कर पता नहीं कहाँ फुर्र हो गए थे,
और सुबह होते ही वापस लौट आते थे—
उन झूलती डालों पर साथ झूलने को।

रात के सन्नाटों में सब कहाँ गायब हो जाते हैं,
इसका पता तो चाँद ही बता सकता है।
पर वो तो बेईमान है, परवाह कहाँ है उसे।
सूरज को पता चलेगा...
तब खबर लेगा इनकी।

असल में यह पेड़ मैं ही हूँ,
कभी मजबूत, कभी बिखर जाता हूँ।
सूरज मेरी उम्मीद है,
जो हर सुबह मुझे जगाता है।
चाँद मेरी तन्हाई है,
जो रूप बदलकर मुझे छल जाता है।
पंछी मेरे रिश्ते हैं—
आते हैं, जाते हैं,
जो फिर भी हर सुबह लौट आते हैं।

ज़िंदगी भी तो कुछ ऐसी ही है,
खोने और पाने की परछाइयों में—
हर रात हमें मिटा देती है,
और हर सुबह हमें
फिर से नया जन्म दे जाती है।

तन्हाइयों के साथ

अंकिता कोइरी
कनिष्ठ अनुवादक

कई शामें गुजारी हैं
इन तन्हाइयों के साथ
कई बातें बाटीं हैं
इन तन्हाइयों के साथ

वक्त कटता गया
जिंदगी ढलती गई
इन तन्हाइयों के साथ
रातें भी शरीक हो गई
आदतें भी ढीठ हो गई

खुद को गहराई में उतारते गए
जिंदगी की रितियों में ढालते गए
इन तन्हाइयों के साथ

यादें भी सताती गई
वादें भी भुलाते गए
जमाना बदलता गया
हम वही ठहरे रहे
इन तन्हाइयों के साथ

कुछ ऐसे ही इश्क बढ़ता गया दरमियां
हम तन्हाई के और तन्हाई हमारे साथ

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
सत्यमेव जयते
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर, 2025 से 30 सितंबर, 2025 तक
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश का कार्यालय, विजयवाड़ा
एवं

भारत सरकार, गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
राजभाषा विभाग
स्वर्ण जयंती समारोह
राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह
50
(1975-2025)
राजभाषा – भारतीय भाषाणां मैत्रीसूत्रम्

सत्यमेव जयते
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा

भारत सरकार, रेल मंत्रालय
दक्षिण मध्य रेलवे, विजयवाड़ा मंडल
Government of India, Ministry of Railways
South Central Railway, Vijayawada Division
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक
एवं

भारत सरकार, रेल मंत्रालय
दक्षिण मध्य रेलवे, विजयवाड़ा मंडल
Government of India, Ministry of Railways
South Central Railway, Vijayawada Division

"योग दिवस :आसन, प्राणायाम और अनुशासन की छटा"

"सांस्कृतिक कार्यक्रम : स्मृतियों के अनमोल क्षण"

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा-2024

इस कार्यालय में दिनांक 14-09-2024 से 30.09.2024 तक संयुक्त हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियागिता में शामिल विजेताओं की सूची निम्नलिखित है:-

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम		
1	पोस्टर प्रतियोगिता	विजेता का नाम	
	प्रथम पुरस्कार	अंकिता कोइरी , क.हि.अ.	
	द्वितीय पुरस्कार	समीर सरकार , लेखाकार	
	तृतीय पुरस्कार	सारधि मिरियाला , स.ले.अ.	
2	निबंध लेखन प्रतियोगिता	हिंदी भाषी	हिंदीतर
	प्रथम पुरस्कार	शशांक सिंह, स.ले.प.अ	कालदाते नितिन राजकुमार, स.ले.प.अ.
	द्वितीय पुरस्कार	रोशन सिंह,लेखापरीक्षक	जी. अनुषा, स.ले.प.अ.
	तृतीय पुरस्कार	सुशील कुमार प्रभात , स.ले.प.अ.	मो अजहरुद्दीन, स.ले.अ.
3	टिप्पण,प्रारूप,प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता		
	प्रथम पुरस्कार	अंकित कुमार मल्लिक, स.ले.प.अ	जे प्रवीण कुमार, स.ले.अ.
	द्वितीय पुरस्कार	शशांक सिहं, स.ले.प.अ.	देबाशीश दत्ता, लेखाकार
	तृतीय पुरस्कार	सुशील कुमार प्रभात , स.ले.प.अ.	जी. अनुषा, स.ले.प.अ.
4	भाषण प्रतियोगिता		
	प्रथम पुरस्कार	साकेत कुमार, स.ले.प.अ.	के काव्या, लेखाकार
	द्वितीय पुरस्कार	सुशील कुमार प्रभात , स.ले.प.अ..	ए मणि सुमंत,लेखापरीक्षक
	तृतीय पुरस्कार	अंकित कुमार मल्लिक, स.ले.प.अ.	टी एस आर पवन कुमार , स.ले.प.अ.
5	कविता पाठ प्रतियोगिता		
	प्रथम पुरस्कार	शशांक सिहं, स.ले.प.अ	के काव्या, लेखाकार
	द्वितीय पुरस्कार	सुशील कुमार प्रभात , स.ले.प.अ.	जी. अनुषा, स.ले.प.अ.
	तृतीय पुरस्कार	रोशन सिह, लेखापरीक्षक	पी विश्वेश्वर राव,लेखाकार

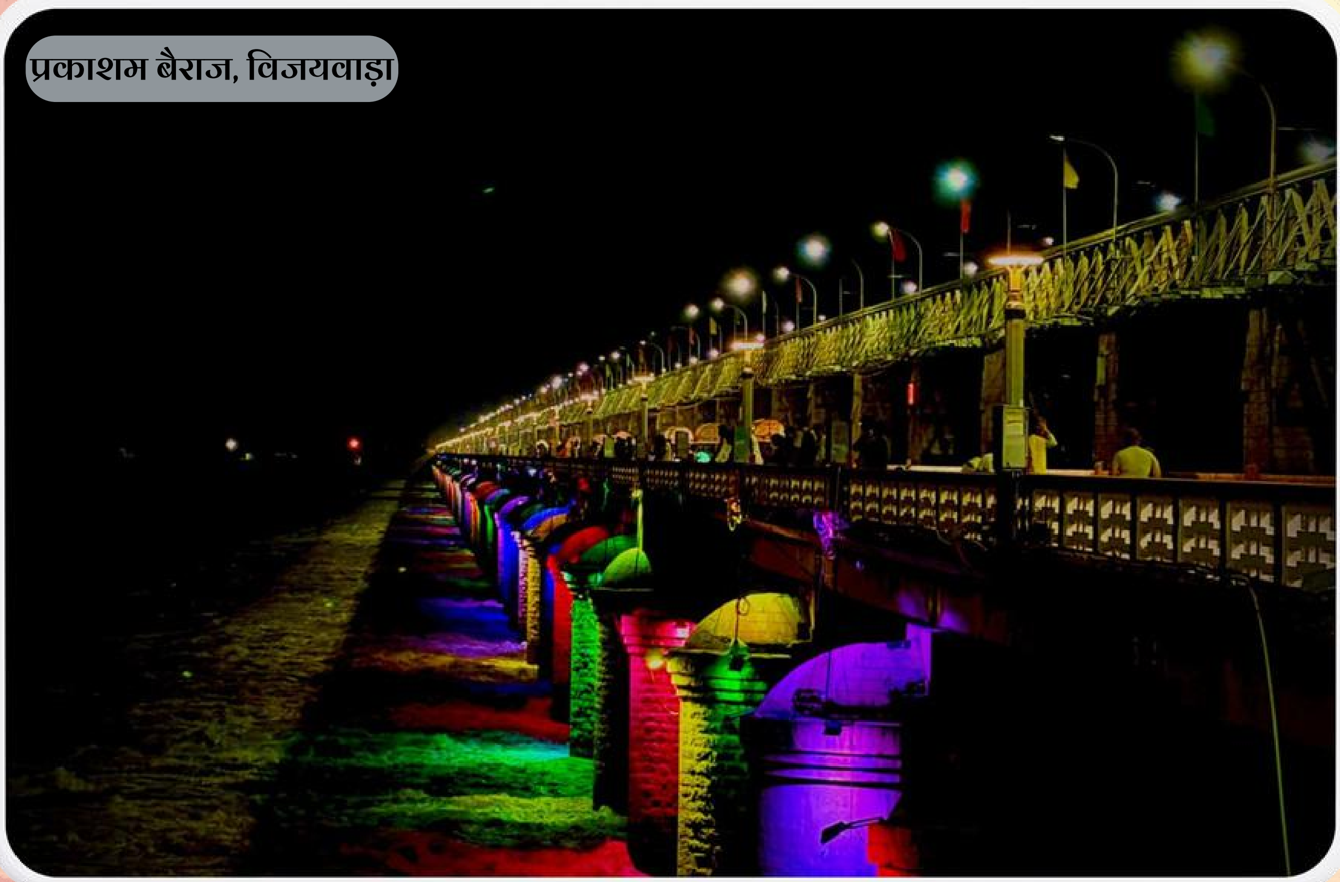

छवि का श्रेय : श्री. साई संपत, लेखाकार